ज्ञानामृत

अप्रैल, 1988

वर्ष 23 ❋ अंक 10

मूल्य 1.75

राजयोग के अभ्यास से सहानुभूति तन्तुओं की उत्तेजना (Sympathetic arousal) में कमी आती है, जिससे रक्तचाप का संतुलन होता है. मस्तिष्क-तरंगे शान्त हो जाती हैं. इन शारीरिक परिवर्तनों के कारण स्वास्थ्य ठीक होता है और शरीर के सर्व अंगों में सामंजस्य हो जाता है.

वर्ष २३ अंक १० अप्रैल १९८८ मूल्यः १.७५

बम्बई (बोरीवली) – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना के अन्तर्गत आयोजित सेमिनार में 'लारसेन एंड टुब्रो, पोवई, बम्बई के प्रबन्धकगण तथा यूनियन नेताओं के समक्ष मंच पर (दाएं से) ब्र० कु० दिव्य प्रभा, ब्र० कु० डा० हाइडी, मनोरोग विशेषज्ञ, हेमवर्ग तथा ज्ञानामृत के मुख्य सम्पादक ब्र० कु० जगदीश चन्द जी विराजमान हैं।

अमृतसर सेवाकेन्द्र पर मेजर जनरल युगल सहित पधारे। दादी चन्द्रमणि जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ई०वि०वि० उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट कर रही हैं।

कटनी – ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका, ई० वि० वि० के आगमन पर उनके सम्मान में आयोजित एक अभिनन्दन समारोह में म० प्र० के न्यायमूर्ति माननीय सच्चिदानंद अवस्थी जी सम्बोधन कर रहे हैं। मंच पर भ्राता के० एल० टण्डन, महाप्रबन्धक, आयुध निर्माणी, कटनी, ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी तथा अन्य विराजमान है।

कुरुक्षेत्र में आयोजित 'ज्ञानसूर्य आध्यात्मिक मेले' का अवलोकन करने शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी पधारे। चित्र में भ्राता डा० सुखबीर सिंह, आई०ए०एस०, उपायुक्त ; भ्राता सर्वन सिंह, आई०ए०एस०, अतिरिक्त उपायुक्त,न्यायधीश तथा अन्य दिखाई दे रहे हैं।

जालन्धर—'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के अन्तर्गत सर्व नगर निवासियों को ईश्वरीय पैगाम देने हेतु निकाली गई झाँकियों का एक मनोरम दृश्य

जालन्धर—'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम में पधारे शहर के गणमान्य व्यक्तियों को ब्र० कु० दादी चन्द्रमणि जी आत्मस्मृति का तिलक लगा रही हैं।

बंबई (गामदेवी)—ब्रह्माकुमारी कुसम बहन सिने-अभिनेता भ्राता शम्मी कपूर तथा उनकी युगल को, 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम की जानकारी दे रही हैं।

मद्रास—'शान्तिधाम' में आयोजित एक समारोह में मंच पर (दाएं से) ब्र० कु० ब्रिज मोहन, सम्पादक, प्योरिटी, ब्र० कु० शिवकन्या, डा० शारदा सुब्रह्मन्यम, निदेशक, मैगनेटो बॉयोलोजी संस्थान, डा० एम० जी० आर० मैडिकल यूनिवर्सिटी की विशेष अधिकारी, बहन डा० ललीता कमेश जी (माईक पर) तथा अन्य दिखाई दे रहे हैं।

कुरुक्षेत्र में आयोजित 'ज्ञानसूर्य आध्यात्मिक मेले' के उद्‌घाटन समारोह में हरियाणा विधान सभा के उपाध्यक्ष भ्राता कुलबीर सिंह मलिक जी पधारे। सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु.प्रेम बहन उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट कर रही हैं।

भोपाल में निर्मित 'राजयोग भवन' के चतुर्थ वार्षिकोत्सव में मंच पर भ्राता जी० जगतपति जी, पूर्व मुख्य सचिव, लोक शिक्षा निदेशक भ्राता एस० एस० दीक्षित तथा अन्य वक्तागण विराजमान है।

Regd No. 10563/65-D (E)-70

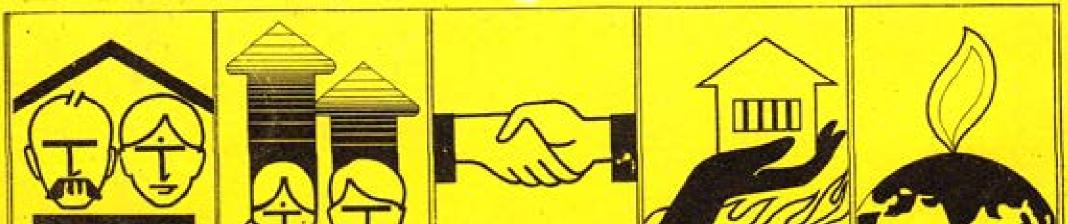

विश्व में शान्ति, सुख तथा समृद्धि की स्थापना हेतु मानव का सामाजिक स्वास्थ्य आवश्यक है. सामाजिक स्वास्थ्य का मूल, आपसी भाई-चारा, सहकारिता, स्व-परिवर्तन, समाजसेवा तथा ज्ञान की आवश्यकता है. इन मूल्यों को अपनाने से संसार सुखमय बनेगा.

अमृत-सूची

१.	अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान (सम्पादकीय)	१
२.	विघ्न हमें बलवान बनाते हैं	५
३.	जीवन से जीवन बनाना सीखें	८
४.	संगममेल है छूटने वाली (कविता)	९
५.	जब लोग हमसे पूछते हैं (आध्यात्मिक बैंक से सम्बन्धित)	१०
६.	ईश्वरीय निवेश विधि	१२
७.	डॉक्टरों की रैली – मैसूर से दिल्ली	१३
८.	डॉक्टरों की रैली – त्रिवेन्द्रम से दिल्ली	१५
९.	डॉक्टरों की रैली – भुवनेश्वर से दिल्ली	१७
१०.	डॉक्टरों की रैली – बम्बई से दिल्ली	१९
११.	'सम्भावना' को समाप्त कर अब 'सुनिश्चितता' को धारण करो	२१
१२.	कुल की मर्यादाएं – पालन करेंगी कन्यायें और मातायें	२२
१३.	वर्तमान में जीवन जियो (कविता)	२३
१४.	गीता-ज्ञान की महिमा (कविता)	२३
१५.	समयानुकूल पुरूषार्थ से सौगुणा फल की प्राप्ति	२४
१६.	लौकिक बाप की अलौकिक शिक्षाएं	२५
१७.	उठो पार्थ ! गाण्डीव सम्भालो	२६
१८.	आध्यात्मिक सेवा समाचार (सचित्र)	२९
१९.	डाक्टरों की रैली – अमृतसर से दिल्ली	३०

सम्पादकीय

अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान

–सेवा रोगियों की, चिकित्सकों की, नीरोग लोगों की और रोग पैदा करने वालों की भी–

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय – वर्तमान समय एक विश्वव्यापी संस्था है जिसके १७०० से भी अधिक शिक्षाकेन्द्र विश्व के ५० से भी अधिक देशों में सेवारत है। यह संस्था नैतिक मूल्यों की और मन की शान्ति बनाये रखने की शिक्षा द्वारा विश्व में सुख-शांति की पुनर्स्थापना के महत्वपूर्ण कार्य में लगी हुई है। इस उद्देश्य से यह संस्था स्थानीय, प्रादेशिक, देशीय तथा अन्तर्देशीय स्तर के ऐसे कार्यक्रम बनाती रहती है जिससे कि युवा वर्ग, महिला वर्ग, बाल वर्ग, वृद्धजन, ड़ाक्टर, शिक्षाविद्, न्यायविद, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, समाजसेवक आदि-आदि हरेक वर्ग को मानवीय मूल्यों के पालन के लिये प्रेरित किया जा सके। इसके सेवाकेन्द्रों पर ऐसी शिक्षा दी जाती है जिससे कि हरेक व्यक्ति मन को शान्त एवं सन्तुलित रखता हुआ तथा सहयोग की भावना से कार्य करता हुआ एक अच्छा नागरिक बन सके। अपने इस विश्व-व्यापी शांति-परक कार्यों के फलस्वरूप आज यह संस्था राष्ट्र संघ (U.N.)के आर्थिक एवं सामाजिक परिषद (Economic of Social Council) का सदस्य है तथा 'यूनीसेफ' (UNICEF)से भी सम्बद्ध (affiliated)हैंइसके शान्ति-परक कार्यक्रमों के महत्त्व को मानते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस संस्था को एक शान्ति पदक, एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का 'शान्तिदूत' एवार्ड और पाँच देशीय स्तर के शान्तिदूत एवार्ड प्रदान किये हैं। इस वर्ष इस संस्था ने जो सार्वभौम सेवायोजना बनाई है उसका नाम है – **'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार।**

राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के डॉक्टर विंग द्वारा एक समाज सेवा अभियान

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से संयुक्त एक संस्था है जिसका नाम है – **राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान (Rajyoga Education & Research Foundation)**। इस उपरोक्त संस्था का एक अंग डॉक्टर्स विंग (Doctors Wing) कहलाता है। इन संस्थाओं ने मिलकर एक मुख्य सेवा 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' (Global Co-operation for a better world) योजना के अन्तर्गत एक योजना बनाई जिसका नाम रखा गया 'अखिल भारतीब स्वास्थ्य चेतना अभियान' (All India Health Awareness Campaign) ।

डाक्टरों के पाँच यात्रा दल रवाना हुये देश की सेवा करने

उपरोक्त अभियान के अन्तर्गत भारत देश के ५ विभिन्न स्थानों से डॉक्टरों तथा नर्सों आदि ने ५ यात्रायें प्रारम्भ की। एक यात्रा **मैसूर** से २७ फरवरी को रवाना हुई जिसका प्रारम्भ कर्नाटक के स्वास्थ्य मन्त्री द्वारा हुआ। दूसरी यात्रा त्रिवेन्द्रम से ३ मार्च को प्रारम्भ हुई। इसका प्रारम्भ वहाँ के स्वास्थ्य मन्त्री के द्वारा हुआ।

तीसरी यात्रा का प्रारम्भ **भुवनेश्वर** से ५ मार्च को उड़ीसा के राज्यपाल द्वारा हुआ। चौथी यात्रा का प्रारम्भ ९ मार्च को **अमृतसर** से हुआ और पाँचवी यात्रा **बम्बई** से १२ मार्च को महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री श्री चव्हाण जी के निवास स्थान से रवाना हुई। इन सभी से पूर्व, २० फरवरी को इन्दौर में 'अन्तर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन' के उद्घाटन के अवसर पर इस अभियान का प्रारम्भ घोषित किया मध्य प्रदेश के राज्यपाल महोदय ने। इस योजना के सम्बन्ध में यह निश्चित हुआ कि ये सभी यात्री-दल ६ अप्रैल को देहली में पहुँचकर वहाँ के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेंगे और ७ अप्रैल को विश्व-स्वास्थ्य दिवस (World Health Day) के कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे।

हर यात्री-दल में ऐलोपैथी, आयुर्वैदिक एवं होम्योपैथिक के कुछ डॉक्टर्स थे। किसी-किसी यात्री-दल में एक्युपंक्चर (Acupuncture) तथा प्राकृतिक चिकित्सा के भी कुछ विशेषज्ञ थे। इनके साथ ही दो-तीन ब्रह्माकुमारी बहनें भी होता थीं जोकि सहजयोग (Meditation) आदि के विषय को समझा सकती थीं। ये सभी लोग एक मैटाडोर लेकर एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर प्रस्थान करते थे। इनका यात्रा मार्ग पहले से ही निश्चित था और जिस-जिस ग्राम अथवा नगर में जहाँ-जहाँ इनको पहुँचना था वह भी पूर्व निश्चित था। इनके वहाँ-वहाँ पहुँचने की सूचना उस-उस प्रदेश की सरकार को और विशेष स्वास्थ्य मन्त्रालय को पहले से ही प्राप्त थी।

हरेक प्रादेशिक स्वास्थ्य मन्त्रालय द्वारा सहयोग की भावना

हरेक प्रदेश के स्वास्थ्य मन्त्रालय ने अथवा स्वास्थ्य विभाग के निर्देशक (Director of Health Services) ने उस-उस स्थान के मेडीकल कालेजों तथा अस्पतालों को सूचना दी हुई थी और ये निर्देश भी दिया था कि वे इन यात्रियों को सहयोग दें।

हरेक यात्रा दल कहाँ-कहाँ गया?

मैसूर से २७ फरवरी को जो डॉक्टरों का ग्रुप रवाना हुआ, वह मण्डया, बैंगलोर, सीरा, चित्रदुर्गा, दावनगिरी, हुबली, गोवा, बेलगाम, निपाणी, कोल्हापुर, जामरवण्डी, बीजापुर , शोलापुर, ओसमानाबाद, लटूर, गुलबर्गा, सेदम, थंदूर, हैदराबाद, निजामाबाद, नांदेड, अकोला, अमरावती , वर्धा, नाकापुर, मुलतई, इटारसी, होशंगाबाद, भोपाल, नरसिंहपुर, गुना, शिवपुरी, गोरस, गंगापुर सिटी, करोली, भरतपुर, बल्लभगढ़, फरीदाबाद होता हुआ और इस प्रकार लगभग ४० स्थानों पर सेवा करता हुआ ६ अप्रैल को दिल्ली पहुँचा।

त्रिवेन्द्रम से ३ मार्च को जो ग्रुप रवाना हुआ, उसने दिल्ली पहुँचने तक इस यात्रा के दौरान क्वीलोन, कोचीन, त्रिचूर, कोयम्बटूर, इरोड़, सलेम, कृष्णागिरी, वेलोर, मद्रास, नेलोर, ओंगोल, चिराला, विजयवाड़ा, राजमन्दरी, विशाखापटनम, विजयानाग्राम, कोरापट, जगदलपुर, कासकल, रायपुर, मण्डला, जबलपुर, दमोह, सागर, झाँसी, ग्वालियर, आगरा और मथुरा आदि शहरों में लगभग ३० स्थानों पर सेवा की।

भुवनेश्वर से ५ मार्च को डॉक्टरों आदि का जो दल रवाना हुआ वह उड़ीसा राज्य के कटक, बालेश्वर, बारीपदा, बंगाल स्टेट के कलकत्ता, आसनसोल, बिहार स्टेट में धनबाद, बोरो, राँची, पटना, दरभंगा, मुजफ्फरपुर और उत्तर प्रदेश में वाराणसी, मिर्जापुर, इलाहाबाद कानपुर, लखनऊ, फतेहगढ़, फर्रुखाबाद, फिरोजाबाद, एटा, कासगंज, अलीगढ़, बुलन्दशहर, गाजियाबाद शहरों से होता हुआ और बस से लगभग २५ स्थानों पर स्वास्थ्य चेतना कार्यक्रम करता हुआ दिल्ली पहुँचा।

अमृतसर से ९ मार्च को जो डॉक्टर आदि रवाना हुये वे बटाला, जालन्धर, होशियारपुर, लुधियाना, पटियाला, चण्डीगढ़, शिमला, अम्बाला, कुरुक्षेत्र, करनाल सहारनपुर, हरिद्वार, पानीपत, जीन्द, हिसार, सिरसा, भटिंडा, फरीदकोट, फिरोजपुर-कैन्ट, श्री गंगानगर, सूरतगढ़, बीकानेर, रत्लागढ़, सीकर, नीम का थाना, नारनौल, भिवानी और रोहतक, लगभग २८ स्थानों से होते हुये दिल्ली पहुँचे।

बम्बई से १२ मार्च को जो यात्री-दल रवाना हुआ वह दिल्ली पहुँचने से पूर्व निम्नलिखित शहरों से गुजरा :-

वापी, वलसाड़, नवसारी, सूरत, भरूच, बड़ौदा, अहमदाबाद, गांधीनगर, महसाना, पाटन, बरमेर, बलोतरा, जोधपुर, पाली, सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, व्यापार, अजमेर जयपुर, कोटपुतली, रेवाड़ी गुड़गाँव। इस प्रकार उन्होंने भी लगभग २५ स्थानों पर सेवा की।

इस प्रकार ये पाँचों दल देश के कुछेक प्रदेशों को छोड़ कर लगभग सभी प्रदेशों में गये और इन्होंने लगभग १५० पड़ाव डाले। इनमें हर स्थान पर इन्होंने एक ही दिन में विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया जिनका उल्लेख हम आगे करेंगे।

जनता में स्वास्थ्य-चेतना अभियान

जहाँ कहीं इन डाक्टरों का पड़ाव था, वहाँ-वहाँ इनके लिये सार्वजनिक भाषण निश्चित किए हुये थे। इन भाषणों में ये लोग जनता को स्वास्थ्य का महत्त्व बताते थे और उन्हें यह भी समझाते थे कि वैज्ञानिक शोध के अनुसार ८० प्रतिशत से भी अधिक रोग **मानसिक तनाव** से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार वे जन-जन को इस बात के लिये प्रेरित करते थे कि वे तनाव रहित (Tension-free) जीवन जियें और कि वे सदा प्रसन्न, सन्तुष्ट एवं शान्त रहने की कला को सीखें तथा उसका अभ्यास करें। वे उन्हें बताते थे कि दमा, हृदयरोग, रक्तचाप में वृद्धि (High blood pressure) पेट में

रसौली (Peptic ulcer), जोड़ों में दर्द (Arthritis) और यहाँ तक कि कैन्सर (Cancer) आदि का भी एक मुख्य कारण मानसिक तनाव है। अतः वे उन्हें खुश रहने की विधि सीखने के लिए प्रेरित करते थे ताकि ऐसे रोग पैदा ही न हों और लोग अस्पतालों में जाकर परेशान होने और दवाइयों पर पैसा खर्च करने तथा शारीरिक कष्ट पाने से बच जाएँ।

स्वच्छता एवं सात्त्विक खान-पान पर बल तथा धूम्रपान, मद्यपान और द्रव्यपान से मुक्ति की विधि का स्पष्टीकरण

वे जनसाधारण को खान-पान के बारे में ज्ञान देते थे और स्वच्छता का महत्त्व जतलाते हुये उन्हें शाकाहारी एवं सादा भोजन के गुण और लाभ बतलाते थे। साथ-साथ वे धूम्रमान, मद्यपान और द्रव्यपान की भी आर्थिक, सामाजिक एवं शारीरिक हानियों का परिचय देते थे तथा इनसे मुक्ति पाने का मार्गदर्शन भी करते थे। फिर उन्हें यह भी बताते थे कि चिन्ता, जल्दबाजी, अधिक महत्त्वाकाँक्षा और अधिक तृष्णाएँ तथा कामनायें और अस्वच्छता की आदत भी किस प्रकार से रोग को निमन्त्रण देती है। इस प्रकार वे उन्हें समझाते कि मनुष्य का स्वभाव, उसके संस्कार और उसकी आदतें भी उसके स्वास्थ्य के प्रश्न से जुड़ी हुईं हैं। इस बात को लेकर वे उन्हें सन्तोष, धैर्य, सहिष्णुता इत्यादि दिव्य गुणों को धारण करने का परामर्श एवं सुझाव देते थे और बताते थे कि सादा जीवन और महान् चरित्र एवं निश्चिन्त और प्रसन्न स्वभाव ही मनुष्य के स्वास्थ्य की चाबी है।

मेडिकल कालेजों एवं अस्पतालों में प्रेरणाप्रद भाषण

अपनी यात्रा के दौरान हरेक यात्री ने, कई नगरों में, मेडिकल कालेजों और अस्पतालों में भी भाषण दिये अथवा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेवाकेन्द्रों पर डॉक्टरों के साथ उनकी स्नेह संगोष्ठियाँ (Get-Together) निश्चित की गयीं थीं। अपने ही वर्ग के बन्धुओं को सम्बोधित करते हुये उन्होंने 'सम्पूर्ण स्वास्थ्य' (Holistic Health) के विषय पर विचार व्यक्त किये। चर्चा के दौरान, उन्होंने इस बात को उभारा कि 'विश्व स्वास्थ्य संघ ने स्वास्थ्य की जो परिभाषा की है उसके अनुसार शारीरिक स्वास्थ्य उसका केवल एक पहलू है। और उसके अतिरिक्त मानसिक (Mental), सामाजिक (Social) स्वास्थ्य का होना भी जरूरी पहलू है। इस बात को उठाकर डाक्टरों से निवेदन किया गया कि रोगी की चिकित्सा करते समय रोगी की **मानसिक स्थिति** और उसके **सामाजिक व्यवहार** को भी ध्यान में रखना जरूरी है, वर्ना मनुष्य के मन में चिन्ता, भय और व्यवहार में क्रोध, आवेश, घृणा, बदले अथवा हिंसा की भावना आदि बनी रहने से दवाई से थोड़ा-सा लाभ होने के बाद फिर इन्हीं कारणों से वही या अन्य रोग उपस्थित हो जायेंगे। अतः रोगी को यह ख्याल रखना जरूरी है कि वो अपनी आदतों, अपने व्यवहार तथा अपने विचार एवं जीवन की पद्धति को ठीक करने का सहयोग देते हुये युक्त व्यवहार (Positive Health) का लाभ प्राप्त करें।

(i) ये भी सुझाव दिया गया कि यदि डाक्टर स्वयं इस विषय पर सहायता न कर सकें तो ऐसे रोगियों को किसी ऐसी अच्छी संस्था से सम्पर्क करने का सुझाव दें जहाँ पर कि वे किसी मन को शान्ति देने की कला अर्थात् सहज राजयोग तथा जीवन को दिव्य बनाने की विद्या का लाभ ले सकें

(ii) डाक्टरों अथवा चिकित्सकों के सामने यह भी विचार प्रस्तुत किया गया कि वे स्वयं भी सहज राजयोग का अभ्यास करके अपने जीवन में शान्ति प्राप्त करें क्योंकि स्वयं उनका जीवन भी अत्यन्त व्यस्त है और कई प्रकार से तनाव के कारण उपस्थित होते रहते हैं। इस प्रकार चिकित्सक वर्ग की सेवा भी की गई। उन्हें संक्षेप में सहजयोग विधि का अभ्यास बताया और कराया गया।

(iii) डॉक्टरों से यह भी निवेदन किया गया कि **अधिक औषधियाँ (Over drugging) देकर** रोगी को तुरन्त स्वास्थ्य (Instant health) देने की जो होड़ है उसमें वे न पड़ें तो अच्छा है क्योंकि इसका प्रभाव रोगी के शरीर पर ठीक नहीं पड़ता और रोगी को तेज दवाइयों की अधिक आदत (adicti on) हो जाती है।

(iv) डॉक्टरों को ये भी बताया गया कि ये ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस वर्ष को सहयोग वर्ष (Co-operation year) के रूप में मना रहा है और डॉक्टर्स भी रोगियों के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदलने का सहयोग दें। वे शरीर को एक मशीन मानकर तथा उसके भिन्न अँगों अथवा अवयवों को उनके पुर्जे मानकर उनका अलग-अलग इलाज करने के दृष्टिकोण की बजाय सम्पूर्ण शरीर को तथा मन को स्वस्थ करने (Holistic Health) का दृष्टिकोण अपनायें और रोगी को विश्वव्यापी मानवीय परिवार का सदस्य मानते हुये उसके प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ हों और कुछेक अति निर्धन लोगों का निःशुल्क लाभ भी करें अथवा उन्हें निःशुल्क परामर्श भी दें।

कालेजों तथा स्कूलों में भाषण

डाक्टरों ने अनेकानेक नगरों में कालेजों एवं स्कूलों में भी भाषण किये। वहाँ के विद्यार्थियों को चित्रों द्वारा कई स्वास्थ्य उपयोगी बातें बताई गईं। उनको स्वास्थ्य का मूल्य समझाते हुए उन्होंने धूम्रपान, मद्यपान एवं द्रव्यपान (Drug addiction) से होने वाली हानियों को प्रभावशाली ढंग से बताया और इन आदतों से बचकर रहने अथवा इनसे मुक्त होने की सम्मति दी जिससे व्यक्ति सहज ही अपने मनोबल (Will Power) को विकसित करके आदतों से छूट सकता है।

उन्होंने विद्यार्थियों को तथा जन-जन को ब्रह्मचर्य का महत्त्व भी बताया और जनसंख्या में जो तीव्र वृद्धि हो रही है उसकी रोकथाम के लिये इसे उत्तम साधन के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने इस बात को स्तष्ट किया कि किस प्रकार जनसंख्या की तीव्र वृद्धि की रोकथाम देश के लिये जरूरी है और उसके लिये ब्रह्मचर्य अथवा संयम का होना आवश्यक है।

पत्रकार सम्मेलन, रेडियो वार्ता, दूरदर्शन पर कार्यक्रम तथा वीडियो फिल्म

डाक्टरों के हर यात्री-दल ने स्थान-स्थान पर पत्रकार सम्मेलनों को सम्बोधित किया और कई जगह उनके रेडियो इन्टरव्यु, टी०वी० पर वार्ता अथवा प्रदर्शन भी हुये और कहीं-कहीं उन्होंने वीडियो (Video) फिल्म द्वारा भी स्वास्थ्य के विषय पर रूचिकर तरीके से कई बातें बताईं।

चिकित्सा शिविर और सुस्वास्थ्य प्रदर्शनी

डाक्टरों के यात्री-दलों ने अनेकानेक स्थानों पर पूर्व-आयोजित चिकित्सा-शिविरों (Health camps) में रोगियों को देखा। उन्हें औषधि दी तथा स्वास्थ्य के लिये परामर्श प्रदान किया। इससे बहुत से निर्धन रोगियों को निःशुल्क औषधि मिली। किसी-किसी नगर में तो, अस्पतालों में डॉक्टरों की हड़ताल थी और इन शिविरों के आयोजन से जनता को स्वास्थ्य के विषय में राहत मिली।

स्थान-स्थान पर सुस्वास्थ्य प्रदर्शनियाँ भी लगाई गई। इनमें चित्रों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया कि मानसिक तनाव का प्रभाव मनुष्य के स्नायुमण्डल (Sympathetic & parasympathetic nervous system) पर, अन्तःस्रावी ग्रन्थियों (endrocrine glands), हृदय आदि-आदि पर कैसे पड़ता है और किस प्रकार मनुष्य को रोग की ओर धकेलता है। भोजन, स्वच्छता, सम्पूर्ण स्वास्थ्य इत्यादि विषय पर भी इन चित्रों द्वारा प्रकाश डाला गया और मद्यपान, धूम्रपान और द्रव्यपान द्वारा शरीर को होने वाली हानियों को भी दर्शाया गया।

इस प्रकार डॉक्टरों, नर्सों, सहज-राजयोगी भाइयों तथा सहज-योगिनी बहनों के हरेक यात्रा-दल ने भारतवर्ष में लोगों मे काफी बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य चेतना पैदा करने और स्वास्थ्य के निमित्त अपने विचार, आहार, व्यवहार और आचार को श्रेष्ठ बनाने तथा शान्ति के लिये सहज राजयोग के अभ्यास की विधि बताने की निःशुल्क सेवा की। अपने व्यवसाय से कुछ दिन निकालकर उन्होंने अपने ही खर्च से लोगों के पास जाकर उन्हें यह लाभ दिया।

उन्होंने न केवल स्वास्थ्य शिविरों आदि में रोगियों की सेवा की और अस्पतालों तथा मेडीकल एसोसियेशन्स में डाक्टरों की सेवा की बल्कि जो लोग अपने निर्दयतापूर्ण, घृणापूर्ण या अन्यायपूर्ण व्यवहार से दूसरों को परेशान करके उन्हें रोगी बनाते है, उन्हें भी मानसिक एवं सामाजिक रूप से स्वस्थ होने की विधि बताई।

प्राप्त आँकड़ों से विदित होता है कि अलग-अलग स्थान से ये जो ५ यात्रा-दल निकले, इन्होंने अपनी यात्रा के दौरान लगभग **३७५ भाषण** किये। इनमें से कुछ भाषण सार्वजनिक सभाओं में, कुछ रोटरी क्लब, लायन्स क्लब इत्यादि क्लबों के सदस्यों के सम्मुख, कुछ उन-उन स्थानों की मेडिकल एसोसियेशन्स (Medical Associations) के सदस्य-डॉक्टरों के सम्मुख, कुछ स्कूलों और कालेजों में और कुछ अस्पतालों में हुए।

पत्रकार-सम्मेलनों में सम्बोधनों अथवा पत्रकारों से भेंट-वार्ता के फलस्वरूप लगभग **२५० पत्रों** और पत्रिकाओं में इस विषय में समाचार और इस अभियान के उद्देश्य इत्यादि प्रकाशित हुये। स्थानीय एवं प्रादेशिक पत्रों के अतिरिक्त राष्ट्रीय स्तर के पत्रों में भी इस विषय में समाचार छपा।

लगभग ८० **जगहों पर चिकित्सा-शिविर** लगाये गये जहाँ बहुत से रोगियों ने लाभ उठाया और आगे के लिए अपने जीवन को स्वस्थ बनाये रखने के लिऐ प्रेरणा भी पाई।

लगभग **१० रेडियो वार्ताएँ** और लगभग **१० टी०वी० कार्यक्रम** (T.V. programme) हुये।

इस यात्रा के दौरान, अपठित अथवा अशिक्षित जनता को जहाँ लाभ हुआ और मध्यम वर्ग के लोगों ने जहाँ स्वास्थ्य के विषय पर प्रकाश पाया, वहाँ समाज के प्रबुद्ध वर्ग को भी रोशनी (intelligentia) मिली। इस प्रकार ये स्वास्थ्य चेतना अभियान अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हुआ। **— जगदीश**

कोंनगर (कलकत्ता) – 'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान के अन्तर्गत आयोजित डाक्टर्स रैली के आगमन पर एक समारोह में प्रोफेसर आर० एन० शाह भाषण कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० निर्मलशान्ता तथा अन्य वक्तागण विराजमान है।

विघ्न हमें बलवान बनाते हैं

ब्र० कु० सूरज कुमार, माऊण्ट आबू

मन्दिरों में जिनकी मूर्तियों के दर्शन से ही भक्तों के विघ्न टल जाते हैं, वे स्वयं भला विघ्नों के वश कैसे हो सकते हैं ? जिनके ऊपर स्वयं भगवान् छत्रछाया बनकर रहता हो, उन्हें भला विघ्न कैसे हिला सकते हैं ? जिनकी जीवन-नैया का खिवैया स्वयं सर्वशक्तिवान हो, तूफानों के झोंके उनकी नाव को भला कैसे डुबो सकते हैं ? और जो स्वयं ही सर्व के विघ्नविनाशक हों, उन्हें भला विघ्नों से डर कैसा ? विघ्नों से युद्ध करना तो उन्हें एक अनुपम आनन्द का आभास कराता है। विघ्नों को पार करके संसार के लिए एक नवीन पथ निर्माण कर देना-इसे ही वे महानता समझते हैं। तो आओ, हम सभी मिलकर विघ्नों को चुनोती दें।

विघ्नों के कंटीले पथ पर चलना कोई भी नहीं चाहेगा। परन्तु यदि रास्ता ही वही हो तो साहस व धैर्यता के साथ आगे बढ़ना चाहिए। हम विघ्नों का पूर्ण विश्लेषण करें और विघ्नों पर हमारी विजय सदा के लिए निश्चित है – ऐसा दृढ़ निश्चय कर सदा के लिए निश्चिन्त हो जाएं।

निःसन्देह यदि कोई मनुष्य चारों ओर से विघ्नों से घिर गया हो तो मनोस्थिति को अचल रखना सहज काम तो नहीं है। विघ्नों के प्रकोप तो शक्तिशाली, बुद्धिवान व्यक्ति को भी हिला कर रख देते हैं। ऐसे में चाहिए कोई शक्तिशाली साथी जो सच्चा साथी बनकर मनुष्य के साहस, हिम्मत व निश्चय को स्थिर रखने में सहयोग दे सके। कोई ऐसा योग्य मित्र हो तो भी अच्छा,नहीं तो त्रिकालदर्शी भगवान को ही अपना सदाकाल का साथी बना लेना चाहिए। कई बार बुद्धि के डिस्टर्ब होने से सूक्ष्मातिसूक्ष्म सर्वशक्तिवान परमात्मा से बात करने में सफलता नहीं भी होती, इसलिए ही कहा गया है कि कोई योग्य साथी भी हो तो भी अच्छा। परन्तु यदि कोई भगवान् को अपना साथी बना ले तो विघ्न रुई की तरह उड़ जाएंगे। तो स्वयं को विघ्नों के समक्ष हिमालय की तरह अचल खड़ा रखने के लिए इस प्रकार की स्मृति बनायें :–

तुम्हारी चिन्ता स्वयं भगवान् कर रहा है

जब से हमने भगवान् का हाथ पकड़ा, उसने हमारे अनेक बोझ हर लिये हैं। यदि हम यह कहें कि अपने आज्ञाकारी, वफादार वत्सों के ९०% विघ्न तो उसने हर ही लिए हैं तो अतिश्योक्ति न होगी। भला हम विचार करें – कोई समर्थ बाप अपने प्यारे बच्चों को विघ्नों में उलझा कैसे देख सकता है ? फिर वह तो सर्व-समर्थ है और हम उसके वे महान् वत्स है जिन्होंने उसके सभी कार्य सम्पन्न करने की दिल में ठान ली है, जो उसके ईशारों पर कुर्बान हैं। थोड़े से विघ्न जो उसने हमारे लिए छोड़ दिये है, हमें शक्तिशाली व अनुभवी बनाने के लिए, अन्यथा भला सर्वशक्तिवान् के लिए क्या कठिन है ? चुटकी बजाते ही वह हमें सम्पन्न बना सकता है ।

तो हम याद रखें – भगवान् स्वयं हमारी चिन्ता कर रहा है ! हमें अपनी चिन्ता क्यों ? वह बार-बार कह रहा है – बच्चे, अपना सारा बोझ मुझे दे दो, तुम क्यों बोझ उठाये फिरते हो ? चिन्ताएं छोड़ बेगमपुर के बादशाह बन जाओ। फिर भी यदि बोझ उठाने में कोई अपना गौरव अनुभव करे तो उसकी बुद्धि के तो कहने ही क्या .... !

सर्व शक्तिवान की छत्रछाया तुम्हारे ऊपर है।

जिनके ऊपर भगवान् के आशीर्वाद का हाथ हो, जिनके सिर पर सर्वशक्तिवान ने अपनी छत्रछाया लगा दी हो, वे भी यदि विघ्नों से डरेंगे तो साधारण मनुष्यों का क्या हाल होगा ? हम इस स्वमान को भूल न जाएँ कि जिनके साथ सर्वशक्तिवान हो, विजय उन्हीं की होगी... । हमारा उसमें सम्पूर्ण विश्वास हो... । वह सदा ही हमारा साथी है। **'जहाँ भगवान है, विजय-श्री वहीं है'–इस निश्चय की आधार-शिला पर हम विघ्नों को चैलेंज करते चलें।** इस छत्रछाया में न तो माया प्रवेश कर सकती और न किसी की अशुभ-भावनाएँ ....। इस छत्रछाया में मन भी अतिशक्तिशाली होता है और बुद्धि भी स्थिर ....

सत्यता का बल तुम्हारे पास है

जीवन में अनेक प्रकार के विघ्न आते है। संसार की ओर से आने वाले विघ्न हों या हम पर बिना अर्थ ही दोष लगाए जाएं... पर हम यह न भूलें कि कलियुग के अन्त में भी सत्यता की शक्ति का बल कम कार्य नहीं करता। 'असत्यता' कमजोर है, 'सत्यता' शक्तिशाली है। इसलिए अपने सत्यता के बल पर हम धैर्यचित व अचल बने रहना सीखें। स्वयं में ही हमारा विश्वास कम न हो।

अभी-अभी की एक घटना है । संयुक्त राष्ट्र संघ के एक उपमहासचिव पर कोई असत्य दोष आरोपित किये गये और उसे संसद में किसी कमेटी के सामने पेश होने को कहा गया। उसी समय उसने शिवबाबा की 'सत्यता की शक्ति' पर चली अव्यक्त मुरली (महावाक्य) सुनी। उसे सुनकर वह अति निर्भय हो गये और निश्चिन्तता के साथ वहाँ पेश हुए। सहज भाव से उन्होंने अपनी बात स्पष्ट की और आधा घण्टे में ही उनके अनुकूल फैसला हुआ।

हमें कलकत्ता के एक राजयोगी ने बताया कि उनकी धर्मपत्नी ने मानसिक व्याधि के कारण उस पर तीन बड़े-बड़े केस कर दिये। वर्तमान कानूनों के कारण भयंकर विघ्न आ गये। तीनों केसों में दस-दस वर्ष की सजा का प्रावधान था, जमानत होना भी असम्भव था। चार-चार पुलिस अधिकारी मेरे से पूछताछ करते थे। परन्तु क्योंकि न तो मैंने अपनी पत्नी को सताया था, न कोई अत्याचार किये थे, इसलिए मुझे स्वयं पर पूर्ण विश्वास था कि भगवान् मेरे साथ है…, सत्यता की शक्ति मेरे पास है… मेरा कुछ भी बिगड़ेगा नहीं…। और यही हुआ। इतना ही नहीं छः मास के ये विघ्न मुझे बहुत शक्तिशाली बना गये और ईश्वर में मेरा विश्वास अत्याधिक दृढ़ हो गया।

इस प्रकार हम देखते है कि जहाँ सत्यता की शक्ति है, वहाँ संसार की कोई भी शक्ति – चाहे धन की शक्ति हो, चाहे सरकार की शक्ति हो या कोर्ट की शक्ति – हमारा कुछ भी नहीं कर सकेगी। एक दिन समस्त संसार को हमारी सत्यता के समक्ष झुकना पड़ेगा।

पवित्रता का बल तुम्हारे पास है

सूक्ष्म अपवित्रता विघ्नों का आह्वान करती है। यदि हमारा जीवन विघ्नों से घिर रहा हो तो हमें अपनी पवित्रता को चैक करना चाहिए। जहाँ पवित्रता की शक्ति है, वहाँ इस विशुद्ध अग्नि में विघ्न कहीं भी खड़े नहीं रह सकते। उन्हें हम तक आने का साहस भी नहीं होगा।

चाहे शारीरिक व्याधि के रूप में विघ्न आया हो या भूत-प्रेत के रूप में, चाहे समाज की ओर से विघ्न हो या अपने ही परिवार की ओर से, यदि हम अपनी पवित्रता की शक्ति में स्थिर हैं तो विघ्न सहज ही समाप्त हो जाएंगे। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि **पवित्रता का बल संसार का सबसे बड़ा बल है। इस बल पर हमारे पूरे ८४ जन्मों की नींव स्थिर है। हमें विघ्न-मुक्त रहने के लिए व अनेक आत्माओं को विघ्न-मुक्त बनाने के लिए इस बल को निरन्तर बढ़ाना चाहिए।** पवित्रता के बल से युक्त आत्मा की दृष्टि ही दूसरों को भी विघ्न-मुक्त कर देती है तो स्वयं के विघ्नों की तो बात ही कहाँ…

शिवबाबा पर सम्पूर्ण विश्वास हो

जबकि भगवान् ने स्वयं हमारा हाथ पकड़ा है, तो हमारा कहीं भी अकल्याण नहीं होगा बल्कि विघ्न हमारा मार्ग स्पष्ट करेंगे, विघ्न हमें प्रत्यक्ष करेंगे, विघ्न हमें और ही ईश्वर के समीप लायेंगे-यह विश्वास हमें विघ्नों के समय अडोल रखता है। विघ्नों के समय हमारा निश्चय न डोले कि यह क्या? भगवान् का बनने पर भी वह हमें मदद क्यों नहीं करता? हमने तो सुना था कि वह अपने वत्सों पर विघ्न नहीं आने देता, परन्तु हम तो जब से बाबा के बने, विघ्नों ने हमारा पीछा ही कर लिया! नहीं, सत्यता तो यह है कि यदि ईश्वरीय सहयोग हमारे साथ न होता तो हम जीवित भी न होते।

अहमदाबाद के एक आदर्श परिवार का उदाहरण हमारे पास है। ये ५ भाइयों का संगठित परिवार पिछले २० वर्षों से भी अधिक समय से ज्ञान-योग का अभ्यास कर रहा है और जब से ये सब ज्ञान में आये, इनके कई जवान बच्चों की मृत्यु हुई, समाज की ओर से भी इन्हें काफी कुछ सुनना पड़ा, बार-बार इनके निश्चय की परीक्षा हुई, ऐसे में सम्भल पाना काफी कठिन होता है। परन्तु ये सभी स्थिर हैं। ज्ञान-योग से अपने जीवन को आगे बढा रहे हैं। इनका कहना है – 'हमने काफी धैर्यता व गम्भीरता से काम लिया।' ज्ञान-योग व दैवी परिवार का इन्हें काफी सहयोग मिला। बाबा का प्यार उन्हें इन विघ्नों से पार निकलने में काफी मदद देता रहा।

अधिकतर लोग क्या करते है कि विघ्न आने पर काफी सुस्त एवं अलबेले हो जाते है। विघ्नों के साथ-साथ माया भी उन्हें सस्त बनाने में काफी सफल होती है और वे अमृतवेले का योग व क्लास छोड़ देते है। और कहते हैं – 'क्या करें, बहन जी, विघ्नों ने हमें आ घेरा है।' जैसे कि ज्ञान-योग का त्याग ही मानों उन्हें विघ्न-मुक्त बनायेगा।

हमें ये ईश्वरीय महावाक्य नही भूलने चाहिएं – 'बाप विघ्नों के समय भी बच्चों को समाधान टच करता है। परन्तु बुद्धि की लाइन स्पष्ट न होने के कारण, बच्चे बाप के इशारे को कैच (ग्रहण) नही कर पाते। इसलिये फिर अगले दिन भी **अमृतवेले बाप, बच्चों को समस्या का समाधान टच करता है, परन्तु यदि बच्चे अमृतवेले योग-युक्त ही न हों, तो बाबा क्या करे?**

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि शिवबाबा अपने बच्चों की कितनी मदद करता है! उनके ही महावाक्य हैं – 'बाप हज़ार भुजाओं सहित सदा ही बच्चों की मदद के लिए तैयार है, परन्तु आप बच्चे बाप की मदद लेना तो सीखें।' तो **समस्याओं के समय हम सुस्त व अलबेले होकर ज्ञान-योग का त्याग न कर दें, नहीं तो यह हमारी सबसे बड़ी नासमझी होगी।** विघ्नों के समय पूर्णतया विघ्नमय हो जाना ही विघ्नों से हार स्वीकार कर लेना है। अतः हमें यह नशा रहे कि 'भगवान स्वयं हमारा है।' जिनका सम्बन्धी ही सर्वशक्तिवान हो, उन्हें अन्य किसी की ओर मदद के लिए देखने की क्या आवश्यकता है?

विघ्न-विजयी बनने के लिए पुण्यों का बल जमा करें

विघ्नों का घेरा बन जाने पर इस चक्रव्यूह से निकलने के लिए अन्य बातों के साथ-साथ हमारे पुण्यों का बल भी बहुत काम आता है। जिन्होंने जीवन में किसी को दुःख न दिया हो, ईश्वरीय परिवार में स्नेह का आदान-प्रदान किया हो, ईश्वरीय कार्य में

सहयोग देकर पुण्य का बल बढ़ाया हो, तो उनके साथ रहने वाला अनेक महान् आत्माओं का आशीर्वाद, उन्हें विघ्न-मुक्त होने में बड़ा योगदान देता है।

इसलिये यदि हम स्वयं विघ्न-मुक्त रहना चाहते है तो दूसरों के मार्ग में अपनी कटु वाणी, असहयोगी वृति, दुर्व्यवहार व अन्य गलत तरीकों से विघ्नों की दीवारें खड़ी न करें। अन्यथा पवित्रात्माओं के मन से निकली आहें श्राप बनकर हमें विघ्नों में दबे रहने पर मजबूर कर देंगी। इसलिए पुण्य जमा करें। दूसरों के दिल को सुख देना ही पुण्य है।

विघ्न-मुक्त होने के लिए ज्ञान-युक्त रहें

त्रिकालदर्शी आत्माएं ये जानती हैं कि **विघ्न और कुछ भी नहीं, बल्कि एक कमजोर मन की रचना है** और मन कमजोर तब होता है, जब उसमें ज्ञान का बल नहीं होता। अतः ज्ञान-युक्त अर्थात् स्मृतिस्वरूप होने का अभ्यास हमारे मन को शक्तिशाली रखेगा और कई विघ्न तो हम उत्पन्न ही नहीं करेंगे। तो क्या हम ही विघ्नों का आह्वान करते है ? हाँ, यह सत्य है। कई विघ्न हम अपनी अशुभ वृति द्वारा उत्पन्न करते हैं, कई विघ्न हम अपने चिड़चिड़े स्वभाव के कारण, अपने कटु वचनों के कारण, निकृष्ट व्यवहार के द्वारा व कई विघ्न हम ईश्वरीय अवज्ञाओं के कारण पैदा करते हैं।

ज्ञान द्वारा हम यह भी जानते हैं कि कई विघ्नों के बीज हमने स्वयं ही भिन्न-भिन्न जन्मों में बोए हैं। उदाहरणार्थ – यदि कोई बार-बार हमें परेशान कर रहा है तो अवश्य ही किसी जन्म में हमने उसे परेशान किया होगा। यदि कोई बिना कारण ही हमारे आगे विघ्न डाल रहा है, तो अवश्य ही कभी हम उसके लिए विघ्न बन कर रहे होंगे। यदि तन की व्याधि के रूप में हमारे सामने विघ्न आ रहे हों तो हमने तन से अनेक विकर्म किये होंगे। यदि हमारी आँखें रोगग्रस्त है तो हमारी दृष्टि काफ़ी बुरी रही होगी।

तो एक ज्ञानी स्वयं को ही विघ्न का कारण जान सदा धैर्यचित्त रहकर विघ्नों को सहज ही पार कर लेता है। वह इस चिन्ता में नहीं जलता कि विघ्न क्यों आ रहे हैं ? वह सभी विघ्नों का स्वागत करता है व अनुभव करता है कि विघ्न उसे आगे बढ़ाने में मुख्य भूमिका निभा रहे है।

उसे यह याद रहता है कि **'मैं भी अच्छा, बाप भी अच्छा व विश्व-ड्रामा भी कल्याणकारी है' – यही कैंची है विघ्नों को काटने की।** वह जानता है कि यदि कहीं अकल्याण दिखाई भी दे रहा है तो उस पर्दे के पीछे अवश्य ही कल्याण छिपा हुआ है। वह प्रत्येक विघ्न के राज़ को जानने के कारण सदा ही राज़ी रहता है। अतः विघ्न आने पर बुद्धि से ज्ञान भूल न जाए। **ज्ञान की गुह्य बातों का नशा हमें विघ्नों के विस्तार में जाने से रोकेगा** क्योंकि जब हम किसी बात के विस्तार में जाते हैं, तो विघ्नों का विस्तार हो जाता है।

विघ्न चींटी समान हैं

हमें यह स्मृति रहे कि वर्तमान के विघ्न तो हमारे लिए चींटी समान है। असली विघ्न तो अभी आने है। विनाशकाल में हमें पग-पग पर अनेक अकल्पनीय विघ्नों से गुजरना होगा। और जिन्होंने सच्चे दिल से ईश्वरीय कार्य में सहयोग दिया है, उन्हें विनाशकाल में ईश्वरीय सहयोग प्राप्त होगा।

तो विनाश-काल के विघ्नों पर विजयी बनने के लिए अभी से ही निर्विघ्न व विघ्न-विनाशक स्थिति का अभ्यास चाहिये क्योंकि खाने-पीने की समस्याओं के साथ-साथ हमें अपना सब कुछ (व्यक्ति, वस्तु, वैभव आदि) नष्ट होते भी देखना होगा। सभी तरह के माया के प्रकोप अन्तिम विदाई लेने के लिए हमारे समक्ष उपस्थित होंगे। यदि हम अपने मनोबल को ऊँचा नहीं रखेंगे व ज्ञानस्वरूप नहीं रहेंगे तो हमारी घबराहट ही हमारी हार का कारण बन सकती है।

तो हे विश्व की सबसे अधिक शक्तिशाली आत्माओ, तुम्हें तो समस्त संसार से विघ्नों के मेघ हटाने हैं... तुम्हें अनेकों को जीवन दान देना है... तुम कमज़ोर नहीं हो, मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तुम अकेले भी नहीं हो, शक्तिशाली ईश्वरीय परिवार व समर्थ भगवान् तुम्हारे साथ है। अतः शेर की तरह निर्भीक बन जाओ। विघ्नों को खेल की तरह पार कर लो। धैर्यता व गम्भीरता के बल पर एक आदर्श प्रस्तुत करो ताकि संसार जन्म- जन्म तुम्हें विघ्न-विनाशक के रूप में याद करता रहे और अब भी तुम्हारी याद आते ही मनुष्यों में विजयी बनने का साहस आ जाए। □

मुजफ्फरपर – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम का शुभारम्भ भ्राता शिव दास जी, प्रशासक, नगर निगम मोमबत्ती प्रज्जवलित करते हुए कर रहे है। अन्य भाई बहनें 'सतयुगी संसार' के रचयिता परमात्मा शिव की स्मृति म खड़े है।

जीवन से जीवन बनाना सीखें

एक अच्छे विचारक ने प्रश्न पूछा—आपने जीवन से क्या सीखा ? उत्तर दिया "जीवन बनाना सीखा"। जीवन जीना एक बात है, जीवन बनाना दूसरी बात। जीवन तो पशु-पक्षी भी जीते हैं। दूसरों के लिये जीना, यही जीवन बनाना है। जीवन जीना भी एक कला है। जीवन को कलात्मक रीति से जीना जीवन जीने की कला है।

सीखना अर्थात् जीवन में परिवर्तन लाना। यदि जीवन में बेहतर परिवर्तन आया है तो कहेंगे जीवन से कुछ सीखा। कुछ सीखने की वृति होनी चाहिये तभी सीख सकते। जो सीखता है वह जीवन मे परिवर्तन ला सकता है। यदि सीखा नहीं तो परिवर्तन नहीं। **परमपिता परमात्मा की शिक्षाओं से जो सीखता,उसके जीवन में अलौकिक परिवर्तन आता है। ईश्वरीय शिक्षाएं जीवन जीने की कला सिखाती हैं।**

सीखने के लिये दो मान्यताओं में तुलना करना जरूरी है। पहले किसी बात का मूल्य आंकना फिर धारण करना। यदि किसी व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन नहीं आता तो मानो उसने सुनी हुई बातों में तुलना नहीं की। उससे लाभ है या हानि – यह नहीं देखा, इसलिये धारणा भी नहीं हुई। ब्रह्मा मुख से निराकार शिव द्वारा दिए गए ईश्वरीय ज्ञान और शास्त्रों के ज्ञान में तुलना करने के पश्चात् मूल्यांकन करने पर माना कि ईश्वरीय ज्ञान सत्य है, श्रेष्ठतम है, तभी वह ज्ञान जीवन में धारण हुआ। यदि ज्ञान सुनकर तुलनात्मक मूल्यांकन (Contrast)की विधि नहीं अपनाता है तो ज्ञान जीवन में उतरता भी नहीं। **जो कहते हमने सब कुछ सीख लिया, अनुभव कर लिया, वे अपने जीवन में परिवर्तन भी नहीं ला सकते। जीवन परिवर्तनशील है तथा परिवर्तन करते ही रहना है, जब तक सम्पूर्णता प्राप्त नहीं होती।** इसलिये परिवर्तन के लिये तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाना जरूरी है।

जीवन में व्यवहार करने की कला बाबा ने सिखाई। व्यवहार निःस्वार्थ स्नेह से हो, व्यवहार में सच्चाई - सफाई हो। व्यवहार ऐसा हो जिसे देखकर दूसरा भी अपने व्यवहार में सुधार कर लेवे। यह कितनी बड़ी सेवा है। अपने कर्मों से व व्यवहार से दूसरों में परिवर्तन लाना उच्च सेवा है। हमें जीना है दूसरों के लिये। जीना है स्व परिवर्तन से दूसरों में परिवर्तन लाने के लिये ताकि समाज में ही परिवर्तन आ जाये। यही तो जीने की कला है।

जीवन में विश्राम क्या चीज है, यह भी सदा विदेही बाबा ने सिखा दिया है। यथार्थ विश्राम का अनुभव तब होता जब इस देह से न्यारे होते। वह है सतोगुणी आराम, असोचता की स्थिति। **वास्तविक विश्राम की यही स्थिति है। यही है स्वस्थ स्थिति अर्थात् स्व में स्थित।** सुखदाता बाप कहते – 'बीमारी में कोई हालचाल पूछने आये तो हम रोकर ना कहें कि हिसाब-किताब चूक्ता कर रहे हैं, बल्कि यह बात अंदर में समझकर खुश रहें। निश्चय से निश्चिंतता आती है।

जीवन सादा हो, विचार उच्च हों। खर्च कम करें, चीज ज्यादा चले। स्वच्छता भी हो। (Cleanliness is next to Godliness)खर्च कम, स्वच्छता ज्यादा-ये सीख बाबा ने दी है। अपना काम स्वयं करो तो दूसरों को कष्ट नहीं होगा, मतभेद नहीं होगा। फिर है मांगने की बात। बाबा कहते–'मांगने से मरना भला।' बाप को पहचाने बिना यदि कोई लौकिक सबंध से भी देवे तो लेना नहीं, ऐसा बाबा कहते। तो जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए जीवन में ये धारणाएं करनी है।

किसी को अपना बनाना भी कला है। सामान्य रूप से सभी हरेक को अपना नहीं बना सकते। कारण—स्वभाव-संस्कारों का टक्कर। किन्तु कैसे भी स्वभाव-संस्कार वाली आत्मा को परिवर्तन कर देना, निराश को आशावान बना देना, हिम्मतहीन को हिम्मतवाला बना देना, दिलशिकस्त को दिलखुश बना देना, मायूस को उत्साही बना देना – यह भी कला है जो अति प्यारे ब्रह्मा बाबा में खूब थी। सबके अपने बाबा एक अनपढ़ देहाती से भी ऐसे मिलते जैसे वह बहुत बड़ा वी. आई. पी. हो, उसे रिसीव (Receive)करते और सी-आफ (See off), विदाई भी खुद करते।

जीवन में विनोदी, रमणीक स्वभाव महत्व रखता है। विनोदी व्यक्ति में आकर्षण होता है। **गंभीरता के साथ-साथ रमणीकता भी होनी चाहिये। सेवा करते समय यदि सेवाधारी में विनोद भाव हो तो ईश्वरीय ज्ञान रमणीक ढंग से प्रस्तुत कर वह आत्माओं को आकर्षित कर सकता है।** वह जन-समुदाय को सहज तरीके से जागृत कर आगे बढ़ा सकता है।

जीवन में कई गुप्त बातें समा लेना भी कला है। सुनी हुई बातों को समाना भी कला है। बाबा ने शिक्षा दी है कि सुनी हुई बातों पर विश्वास ना कर, समा लेना चाहिये। अक्सर देखा गया है कि सुनी-सुनाई बातों को इधर-उधर फैलाने से हंगामे भी हो जाते हैं। इस प्रकार वायुमण्डल व्यर्थ और अनावश्यक रूप से बिगड़ जाता है। न्याय के क्षेत्र में भी न्यायाधीश के सामने कोई मामला आता है तो उसका निर्णय करते समय सुनी-सुनाई बात का कानूनी निषेध होने के वैसी बात पर वह विचार नहीं कर सकता। इसलिए सुनी हुई

व्यर्थ बातों को अनसुना कर देना—यह भी कला है।

बेकार को अच्छा बनाने की कला भी सीखने योग्य है। स्वयं शिवबाबा ने हमारा जीवन कौड़ी से हीरा बना दिया है। छीः छीः आत्माओं को अच्छा बनाने की उच्चतम कला तो शिवबाबा की है। वे तो है ही पतित-पावन। किन्तु कोई बेकार स्थूल वस्तु को तो हम काम के लायक बना सकते है। फिर है प्रशासन की कला जो आदि पिता ब्रह्मा बाबा से सीखने लायक है। थोड़े से साधनों से बड़ा कार्य कर दिखाना भी एक कला है। बाबा कहते — 'कार्य शुरु करो साधन जुट जायेंगे'।

इस प्रकार कलात्मक ढ़ग से जीना ही वास्तव में जीवन बनाना है। इसके लिये 'फालो फादर' का डायरेक्शन सदा स्मृति में रहे।

ब्र.कु.व्ही.जे. वराडपांडे, न्यायाधीश, दमोह.

हाथरस – 'सब के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में लोक प्रसिद्ध हास्य कवि 'पद्म श्री काका हाथरसी जी को ब्रह्माकुमारी मीना बहन ईश्वरीय सौगात भेंट कर रही हैं।

चण्डीगढ़ – केन्द्रशासित प्रदेश चण्डीगढ़ के स्वास्थ्य सेवाओं के निदेशक डा. जी. एस. रत्रा जी 'स्वास्थ्य प्रदर्शनी' का उद्घाटन करते हुए दिखाई दे रहे हैं। उनके बांयी ओर दादी चन्द्रमणी जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्र. कु. ई. वि. वि., उनके पीछे 'ज्ञानामृत' के मुख्य सम्पादक ब्र. कु. जगदीश चन्द्र जी तथा अन्य भाई-बहनें अति मीठे शिवबाबा की मधुर याद में खड़े हैं।

कविता

'संगममेल है छूटने वाली'

ब्र० कु० एन० एस० सोलंकी, ऋषिकेश

'संगममेल' खड़ी है देखो, जाने वाली है सुखधाम।
पवित्रता की टिकेट लीजिये, जायेगी बाया मुक्ति धाम॥

एयर कण्डीशन कोच के भागी, अष्ट रत्न सर्व श्रेष्ठ।
बाप समान बने जो फिर से, सफल आदरणीय ज्येष्ठ॥
नम्बर वन से किया दृढ़ निश्चय 'सुन्दर' हुये थे जो 'श्याम'।
संगममेल खड़ी है देखो····

शत आत्मा तीव्र पुरुषार्थ से, प्रथम श्रेणी की अधिकारी।
पास विद आनर बन के बैठी, अति पावन श्रेष्ठाचारी॥
सोलह कला सम्पूर्ण इंजन संग जुड़ा है राम।
संगममेल खड़ी है देखो····

सोलह सहस्त्र बैठे द्वितीय श्रेणी में सन्तुष्ट मणि चुपचाप।
नौ लख को मिली तृतीय श्रेणी, देखो रावण का अभिशाप॥
संचालक 'शिव' रूहानी मेल का, ले जायेगा पावनधाम।
संगममेल खड़ी है देखो····

तेंतीस कोटि टिकेट हैं केवल, भीड़ लगी है भारी।
खिड़की बंद नहीं हुई अब भी, दौड़ो छोड़ लाचारी॥
साढ़े पाँच कोटि के कुम्भ में, टिकेट मिलै बिनु दाम।
'संगममेल' खड़ी है देखो····

कड़ी सजा है बिना टिकेट के, झूठे तुम कहलाओगे।
पतित से पावन बन टिकेट कटा लो, वरना फिर पछताओगे॥
'साँचे पर ही साहिब राजी' समझाये पतित-पावन राम।
'संगममेल' खड़ी है देखो····

ब्रह्मामुख से बज रही सीटी, सिगनल हुआ उस पार।
पश्चाताप करोगे फिर तुम, गाड़ी छूटेगी धूँआधार॥
बिना टिकेट पकड़े जाओगे, द्वारा धर्मराज के धाम।
संगममेल खड़ी है देखो····

गार्ड बाबा दिखा रहे है, झंडी हरी अतिंम बार।
सुषुप्त आत्माओ जागो जल्दी, मिले समय यह एक ही बार॥
भाग्य विधाता टिकेट बाँट रहा, दौड़ो छोड़ के ये दुःखधाम।
'संगममेल' खड़ी है देखो···· □

जब लोग हमसे पूछते हैं

ब्रह्माकुमारी उर्मिल, पालम, दिल्ली

इस बार अचानक ही मेरा उड़ीसा में 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' की सेवाओं से सम्बन्धित एक कार्यक्रम में जाना हुआ। इस कार्यक्रम में आयोजित एक प्रैस-कान्फ्रेंस में पधारे प्रेस-रिपोर्टर्स को भी इस अनोखे, अद्भुत आध्यात्मिक बैंक के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। उन्हें बताया गया कि– 'जैसे आप अन्य बैंकों में अपना खाता खोलते हैं और अपना जमा धन बढ़ाने की कोशिश में रहते हैं क्योंकि आप समझते हैं कि यह जमा धन-राशि ज़रूरत के समय हमारे काम आएगी। इसी प्रकार यह भी एक विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक है। इस बैंक की योजना के तहत यदि हम अपने जीवन में दिव्यगुणों एवं शक्तियों रूपी धन का जमा खाता बढाते हैं तो हम अपने दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं को इन जमा की गई शक्तियों एवं गुणों से आसानी से हल कर सकते हैं।'

यह सुनते ही उपस्थित प्रेस-रिपोर्टर्स के मानस-पटल पर अनेक प्रश्न उभरने लगे तथा उन्होंने इस आध्यात्मिक बैंक से सम्बन्धित प्रश्नों की एक झड़ी-सी लगा दी। जब उन्हें अपने प्रश्नों का सही हल मिला तो उन्होंने ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा संचालित इस योजना की बहुत-बहुत सराहना भी की। इसी प्रकार अन्य लोग भी जब हमसे इस बारे में अनेक प्रश्न पूछते हैं, तब यदि उन्हें यथार्थ एवं युक्तिसंगत हल दिया जाए तो वे इस आध्यात्मिक बैंक की ओर काफ़ी आकर्षित होते है। प्रैस-रिपोर्टर्स द्वारा पूछे गए प्रश्नों में से कुछेक प्रश्न और उनके उत्तर यहां प्रस्तुत हैं:–

प्र० – आपके इस विद्यालय में लोगों तक आध्यात्मिक ज्ञान पहुँचाने के कई तरीके हैं। फिर भी आपने इस 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक खोलने की आवश्यकता क्यों महसूस की?

उ० – कई बार आपने व्यावहारिक जीवन में ऐसा अनुभव किया होगा कि एक बच्चा जब पनीर नहीं खाता है और उसकी माँ ऐसा समझती है कि बच्चे की सेहत के लिए पनीर बहुत आवश्यक है तो माँ किसी प्रकार से उसी पनीर के स्वादिष्ट व्यञ्जन बनाकर बच्चे को खिलाती है और बच्चा भी उसे स्वादिष्ट व्यञ्जन समझकर खुशी-खुशी खा लेता है। इसी प्रकार आज के वातावरण को देखते हुए जब हम प्रत्यक्ष विधि (Direct approach)द्वारा यह कहते हैं कि आप इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में सिखाये जाने वाले ज्ञान-योग को सीखकर अपने जीवन को सुख-शान्ति एवं दिव्यगुणों से सम्पन्न बनायें, तो लोग समझते हैं कि शायद इसमें संस्था के लोगों का अपना स्वार्थ है। लेकिन अब जब वही ज्ञान लोगों को अप्रत्यक्ष विधि (Indirect approach)द्वारा देते हैं कि आप इस विद्यालय द्वारा संचालित इस आध्यात्मिक सहयोग बैंक में अपने गुणों एवम् शक्तियों रूपी धनराशि को जमा कर सकते हैं और इन गुणों एवम् शक्तियों के सहयोग से अपनी मानसिक शांति बढ़ा सकते हैं तो लोग इस बात पर ध्यान देते हैं और खाता (Account) खोलना भी पसन्द करते हैं।

तो देखिये, लक्ष्य देना आध्यात्मिक ज्ञान ही है। लेकिन बस अब थोड़ा लोगों के स्वाद को देखकर विधि परिवर्तन करने से सफलता की महसूसता ज्यादा है, इसलिए हमने यह बैंक खोला है। वैसे भी कहा जाता है आवश्यकता आविष्कार की जननी है। हर समय कुछ न कुछ नवीनता देखना, सुनना खोजना मानव का एक स्वभाव है,उसी अनुसार यदि हमने आध्यात्मिक ज्ञान देने का एक सरल एवम् सरस तरीका खोज भी निकाला तो इसमें हर्जा भी क्या है?

प्र० – क्या इस बैंक में खाता (Account)खोलने के लिए परिचय (Introduction)की आवश्यकता है ?

उ० – अन्य बैंकों में परिचय (Introduction)की आवश्यकता इसलिए पड़ती है ताकि बैंक को यह ज्ञात हो कि आप एक ऐसे ग्राहक हैं जिस पर विश्वास किया जा सके । लेकिन यहां इस बैंक में ग्राहक पर विश्वास न करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि यहाँ ज्ञान, गुणों एवं शक्तियों रूपी जमा धन-राशि को बढ़ाने की बात है । यदि किसी तरह किसी ने ये धन ज्यादा ले भी लिया तो भी इसमें उस व्यक्ति विशेष का एवं सर्व का कल्याण ही है । इसलिए हम इस बैंक में परिचय की आवश्यकता महसूस नहीं करते ।

प्र० – इस बैंक में कितने प्रकार के खाते हैं ?

उ० – चालू खाता – *शुभ भावना, शुभ कामना, दिव्य गुण राशि तथा नैतिक-मूल्यों को बढ़ाने के लिए ।*

बचत खाता – *शांति एवम् प्रसन्नता को बढ़ाने के लिए ।*

स्थायी खाता – *पवित्रता को बढ़ाने के लिए ।*

आवर्ती जमा खाता – *गुणों एवम् शक्तियों को बढ़ाने के लिए ।*

प्र० – क्या आप खाता खोलने पर पास-बुक देंगे ?

उ० – इस बैंक की पास-बुक आपकी बुद्धि रूपी रजिस्टर (Ledger) में से नोट (Note) की गई गुणों, शक्तियों एवम् विशेषताओं की प्रविष्टियां (Enteries) कर्म खाते के रूप में आप के पास ही होंगी। इसलिए बैंक को पास-बुक देने की आवश्यकता नहीं बल्कि आप स्वतः ही इसे पूरा सम्भाल कर रखेंगे और सम्बन्धों में सुधार एवम् स्वयं में परिवर्तन के द्वारा डेबिट-क्रेडिट (घटा-जमा) एवं बैलेंस (Balance) को भी स्वयं ही जांच सकेंगे।

प्र० – आपके विचार से कौनसा खाता (Account) खोलना ज्यादा अच्छा है ?

उ० – मेरे विचार से तो प्रारम्भ में आवर्ती खाता (Recurring Account) खोलना ज्यादा अच्छा होगा। थोड़ा-थोड़ा करके हर महीने बढ़ाते जाएं। कई दिव्य गुणों एवम् शक्तियों को बढ़ाने के कई खाते खोल लीजिए। बस १६ महीने में यह बैंक आपको १६ कला सम्पन्न बना देगा और आप १६ कला सम्पूर्ण श्रीकृष्ण समान देवता बन जाएंगे।

प्र० – क्या इस बैंक से ऋण (Loan) भी मिल सकता है ?

उ० – ***ऋण सुविधा (Loan facility) का तो कहना ही क्या ! आओ, और ज्ञान-सागर परमात्मा से अपनी बुद्धि रूपी गागर भरकर ले जाओ। इस कार्य के लिए तो बैंक का मैनेजर दाता का कार्य करेगा। ऋण को वापिस देने की बात तो छोड़ो, लेकिन यह अनूठा बैंक आपको दिए गये ऋण (Loan) पर इन्ट्रेस्ट (Interest) अर्थात् ब्याज लेने में इन्ट्रेस्ट अर्थात् रूचि तक न लेगा।***

प्र० – इस बैंक का मुख्यालय (Head Office) कहाँ है ?

उ० – बम्बई में। जो कि इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के माऊण्ट-आबू स्थित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यालय के निर्देशन और निरीक्षण के अन्तर्गत कार्य करेगा।

प्र० – इस बैंक के चेयरमैन कौन हैं ?

उ० – ***अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि इस बैंक के चेयरमैन स्वयं निराकार ज्योति-बिन्दु परमात्मा शिव हैं क्योंकि वे ही सर्व गुणों के भंडार हैं। तभी तो यह बैंक भी एक अनोखे प्रकार का बैंक है।***

प्र० – इसकी सम्पर्क शाखाएं (Link Branches) कहाँ-कहाँ होंगी ?

उ० – हर क्षेत्र के क्षेत्रीय कार्यालय ही लिंक शाखा का कार्य करेंगे। क्षेत्रीय कार्यालयों से प्राप्त सर्व आंकड़ों को योजना के समापन पर इक्ट्ठा करके संयुक्त राष्ट्र संघ में पेश किया जायेगा।

प्र० – क्या यह बैंक १८ महीने के बाद बंद हो जायेगा ?

उ० – अपने किए गये कार्य का परिणाम देखना मानवीय स्वभाव है। उसी अनुसार १८ महीने के बाद किए गये कार्य पर विचार-विमर्श करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन किया जाएगा और उसके निष्कर्ष के आधार पर ही अन्तिम निर्णय लिया जायेगा। □

धोरज – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम में ब्र. कु. आनन्द भाई, अध्यक्ष नगर पालिका भाषण कर रहे हैं। मंच पर अन्य वक्तागण विराजमान हैं।

दिल्ली – पश्चिम विहार सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित 'चार दिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी' के उद्घाटन से पूर्व डा० उमेश मित्तल (दाएं से तीसरे) तथा अन्य भाई बहनें 'सुखमय संसार' के 'रचयिता' परमात्मा शिव की स्मृति में खड़े दिखाई दे रहे हैं।

शाहबाद (कर्नाटक) में 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' के उद्घाटन समारोह में ब्र. कु. रत्ना बहन इस अनूठे बैंक की कार्यविधि का वर्णन कर रही हैं। मंच पर सिंडीकेट बैंक के शाखा प्रबन्धक भ्राता शेखर जी तथा अन्य विराजमान हैं।

ईश्वरीय निवेश विधि

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, चण्डीगढ़

धन कमाने के लिए धन की आवश्यकता होती है यह प्रचलित कहावत है। एक बीज डालने पर ही अन्य असंख्य बीजों को प्राप्त किया जा सकता है। यही बात तन-मन-धन की सम्पूर्ण प्राप्ति के लिए भी लागू होती है। सतयुग के आरम्भ में आत्मा के पास ये तीनों शक्तियाँ 100% होती हैं अर्थात् कंचन काया, शक्तिशाली मन और आसानी से प्राप्त अखुट धन होता है। परन्तु युगों का चक्कर लगाते-२ *आत्मा की तीनों शक्तियाँ क्षीण और विकारयुक्त होती जाती* है। तन रोगी, भोगी, जराधीन और कालाधीन हो जाता है। मन असंख्य नकारात्मक, विकारी और स्वार्थयुक्त ख्यालों से भर जाता है। धन मुश्किल से कमाया जाने वाला अति अल्प मात्रा में और वह भी काला धन रह जाता है। ऐसे समय में पिता परमात्मा इन अंश मात्र बची हुई शक्तियों को पुनः विश्व नव-निर्माण रूपी उद्योग में निवेश करवाते हैं जिससे आने वाली दुनिया में ये पुनः सम्पूर्ण रूप में हमें प्राप्त होती हैं।

कोई भी व्यक्ति व्यापार शुरू करता है तो निवेश के लिए उसके पास बहुत कम पूँजी होती है। परन्तु वह कम पूँजी भी उसकी आय बढ़ा देती है। आय बढ़ने से बचत बढ़ती है, बचत बढ़ने से पूँजी में वृद्धि होती है, ज्यादा पूँजी से ज्यादा निवेश होगा और इस प्रकार यह क्रिया उतरोत्तर बढ़ती जाती है। थोड़े समय में उसे काफी धन की प्राप्ति हो जाती है।

ईश्वरीय कार्य में भी जब आरम्भ में थोड़ी-सी मन की शक्ति चाहे याद में या सेवा की योजना में अथवा शुभ भावना, शुभ कामना में लगाई जाती है तो यह शक्ति बढ़ जाती है। इस बढ़ी हुइ शक्ति को पुनः ईश्वरीय कार्य में लगा देते हैं जिससे मन का मनोबल (Will Power) और बढ़ जाता है। पहले मन ईश्वर में एक या दो घन्टे ही लग पाता है परन्त धीरे-२ श्वासों-श्वास समर्पित हो जाता है। इसी प्रकार ईश्वर का बनने से पहले जो व्यक्ति कार्य करने में असमर्थ थे या कर्म की शक्ति और महत्ता का ज्ञान न होने के कारण इससे दूर भागते थे, वह यज्ञ सेवा में तन लगाना शुरू कर देते हैं जिससे तन की क्रिया शक्ति और आरोग्यता में वृद्धि होती है। इसे पुनः ईश्वरीय सेवा में लगाने से वृद्धि की यह प्रक्रिया चलती रहती है। तन और मन के ठीक होने से धन कमाने और उपयोग में लाने की शक्ति आती है। धन सच्चाई और ईमानदारी से कमाया जाता है और व्यर्थ रीतियों, तामसिक खान-पान, नशीले पदार्थों पर होने वाला खर्च बच जाता है, इसे ईश्वरीय कार्य में लगाने से यह शक्ति भी उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।

दुनिया में कुशल निवेशक (व्यापार में पैसा लगाने वाला) अपने सभी साधनों यथा सम्पत्ति (capital), श्रम (labour) *योजना (plan) आदि को इस प्रकार उपयोग करता है जिससे* उसे अधिकतम उत्पादकता (Maximum productivity) प्राप्त हो तथा इनमें से कोई भी साधन का अधिक उपभोग (over use) भी न हो जिससे उसकी कार्य क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़े और कम उपयोग (use) भी न हो जिससे उसकी कार्य-क्षमता बेकार जाए। उदाहरणार्थ पूँजी लगाते समय वह ध्यान रखता है कि कोई अनचाही वस्तु, प्रयोग में न आने वाला भवन या जेवर पड़ा है तो उसे बेचकर पूंजी को व्यापार में लगा दिया जाए। फिर भविष्य में आय बढ़ने पर इन्हीं वस्तुओं को पुनः प्राप्त किया जा सकता है। अतः यहाँ भी मन की शक्ति जो कहीं शरीर की विस्तृत आवश्यकताओं, पदार्थों की आसक्ति में पड़ी है या सम्बन्ध में पड़ी है तो उस सारी शक्ति को निकालकर, एकाग्र करके ईश्वरार्थ लगाने से भविष्य में अधिकतम प्राप्ति होती है। इसलिए ही बाबा बच्चों के कल्याण को दृष्टिगत रखकर बार–बार व्यर्थ बातों, कार्यों, सम्बन्धों में मन की शक्ति को व्यर्थ न गंवाने के लिए श्रीमत देते हैं।

इसी प्रकार श्रम (labour) को कार्य में लगाते वक्त एक तरफ यह ध्यान रखा जाता है कि यह पूर्ण समय मन लगाकर अधिकतम उत्पादन में सहायक बनें दूसरी तरफ समय-समय पर बोनस (Bonus) देकर उनके उमग-उत्साह में वृद्धि भी की जाती है। यहाँ भी तन की शक्ति जितनी भी है उसे पूर्ण रूपेण सेवा में लगाने से अधिकतम प्राप्ति होगी। अगर कोई व्यक्ति 4 घन्टे लगातार यज्ञ-सेवा करने की क्षमता रखता है और करता भी है तो उसे पूर्ण शक्ति के उपयोग के फलस्वरूप प्राप्ति भी पूर्ण होगी परन्तु आलस्य या लापरवाही के कारण यदि यथाशक्ति करता है तो मानो श्रम रूपी साधन को ठीक

शेष पृष्ठ २९ पर

अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान के अन्तर्गत

डॉक्टरों की रैली—मैसूर से दिल्ली

(२७ फरवरी ८८ से २० मार्च ८८ तक प्राप्त सेवा समाचार)

मैसूर से दिल्ली तक आने वाली डाक्टर्स रैली का उद्‌घाटन २७ फरवरी को वहाँ के स्वास्थ्य मन्त्री भ्राता बी० राचय्या द्वारा हुआ। परन्तु इस कार्यक्रम से एक दिन पूर्व ही प्रैस कान्फ्रैस रखी गई जिसमें १० पत्रकारों ने भाग लिया और होने वाली रैली का विस्तृत समाचार १५ समाचार पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ। तथा सायंकाल रेडियो पर भी यह समाचार प्रसारित किया गया। २६ फरवरी को मैसूर मैडीकल कालेज में प्रवचन का कार्यक्रम हुआ जिसमें लगभग ५०० डाक्टर्स, नर्सेस, जुनियर डाक्टर्स ने भाग लिया। अगले दिन अर्थात् २७ फरवरी को उद्‌घाटन हुआ। इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य मंत्री के अलावा अन्य विशिष्ट व्यक्ति—इण्डियन मैडिकल एसोसिएशन, मैसूर शाखा के अध्यक्ष, पशु संगोपन क्षेत्र के मन्त्री, एम० एल० ए० आदि—भी उपस्थित थे।

२७ फरवरी को ही तीन स्थानों पर (१) चामुण्डी हिल्स (२) मैसूर सिटी एरिया (३) हरिजन बस्ती के एक स्कूल में—स्वास्थ्य सुरक्षा शिविर लगाए गए जहाँ स्वास्थ्य की जाँच के साथ-साथ निःशुल्क दवाईयाँ भी वितरित की गई। लगभग११४५रोगियों की जाँच की गई। शाम को शहर के नव निर्मित सभागृह में होलिस्टिक हेल्थ कान्फ्रैस (Holistic Health Conference)रखी गई जिसमें स्वास्थ्य मन्त्री के साथ शहर के नामी ग्रामी डाक्टरों ने भी भाग लिया। सारा कार्यक्रम समाचार पत्रों के पत्रकारों ने भी कवर किया। अगले दिन मैसूर के समीप के स्थानों श्री रंगपट्टणा, पाण्डवपुर, मण्डया, मद्दूर में स्वास्थ्य जाँच शिविर लगाए गए तथा वहाँ भी निःशुल्क दवाइयाँ रोगियों को दी गई। कहीं लायन्स क्लब

महबूब नगर—डॉक्टर्स रैली के यहां आगमन पर भ्राता बी० बालकिष्टा रेड्डी, म्युनिसिपल चेयरमैन यात्री-दल का स्वागत कर रहे हैं।

चित्रदुर्ग—'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' के अन्तर्गत आयोजित 'डाक्टर्स रैली' के आगमन पर एक समारोह का उद्‌घाटन भ्राता डा० जी० जयलक्ष्मण रेड्डी जी मोमबत्ती जलाते हुए कर रहे हैं।

ने सहयोग दिया तथा कहीं पर वहां के स्थानीय डाक्टर्स, नर्सों आदि ने पूर्ण सहयोग दिया। आने वाले रोगियों तथा डाक्टरों आदि को स्वास्थ्य प्रदर्शनी दिखाते हुए उनका ध्यान स्वास्थ्य की सुरक्षा कैसे की जाये, यह भी समझाया जाता। मद्दूर में म्युनिसिपल प्रेजीडेन्ट ने म्युनिसिपल आफिस में ही रैली का स्वागत किया तथा वहाँ प्रवचन का कार्यक्रम भी रखा तथा स्वास्थ्य प्रदर्शनी के चित्रों पर भी स्पष्टीकरण दिया गया।

२९ फरवरी को यह रैली बैंगलोर पहुँची और २० मार्च तक २३ मुख्य-मुख्य शहरों के साथ रास्ते में आने वाले अनेक गाँवों, कस्बों में सेवा करते आगे बढ़ रही है। सभी स्थानों पर कार्यक्रम सफल रहे।

विभिन्न शहरों में रैली पहुंचने पर विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा स्वागत

बैंगलोर में मायो हॉल (Mayo Hall)में शहर के मेयर, डा० सेशाधरी (Dr. Sheshadri)ने रैली का स्वागत किया और रैली में भाग लेने वाले डॉक्टर्स को म्युनिसिपल कारपोरेशन का मीमेन्टो (Memento) देकर सम्मानित करते हुए कहा—"इतना महान् कार्य, जिससे मनुष्यों की शारीरिक एवं मानसिक, दोनों रूप से सेवा हो रही है, का आयोजन करने वाला ईश्वरीय विश्वविद्यालय सचमुच प्रशंसा का पात्र है।" स्वागत समारोह में मेयर के साथ डिप्टी मेयर तथा कारपोरेशन के सभी कमिश्नर उपस्थित थे। नीलमंगला में तालुक पंचायत अध्यक्ष, मण्डल प्रधान, जिला

परिषद के २ सदस्यों, ब्लाक डिवेलपमेन्ट आफीसर, कृषि महाविद्यालय के उपनिदेशक, तहसीलदार तथा अनेक अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने रैली का हार्दिक स्वागत किया। गोवा में लायन्स क्लब के प्रेजीडेन्ट ने रैली का भाव भीना स्वागत किया। बेलगाम पहुंचने पर रैली का स्वागत मेडीकल एसोसिएशन, महिला मण्डल, बैंक एसोसिएशन तथा मेयर के द्वारा किया गया। इसी प्रकार लटूर में नगर परिषद के अध्यक्ष भ्राता मनमठप्पा लोकाण्डे तथा कलेक्टर भ्राता सांरगे द्वारा, गुलबर्गा में मेयर भ्राता राजेन्द्र तिवारी द्वारा, तंदूर में एम. एल. ए. भ्राता एम. चन्द्रशेखर द्वारा, महबूब नगर में नगर परिषद के अध्यक्ष भ्राता कृष्णय्या एवं एम० एल० ए० भ्राता जी० पी० चन्द्रशेखर द्वारा हुआ। इस प्रकार रैली का स्वागत और सम्मान इन विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा किये जाने पर और भी उमंग उत्साह बढ़ गया।

प्रवचनों एवं प्रदर्शनियों द्वारा सेवा

मैसूर से प्रारम्भ करके वर्धा पहुंचने तक १०५ स्थानों पर प्रवचनों एवं ६ स्थानों पर सुस्वास्थ्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। ये कार्यक्रम सेकेण्डरी स्कूलों, कालेजों, मेडीकल कालेजों, विश्वविद्यालयों, मेडीकल एसोसिएशन, क्लब्स आदि स्थानों के साथ-साथ सार्वजनिक सभाओं के रूप में भी रखे गये। इनमें से लगभग २९ कालेजों एवं मेडीकल कालेजों में, ९ क्लबों (रोटरी, लायन्स) में प्रवचनों के कार्यक्रम हुए। इन कार्यक्रमों से लगभग १७,००० लोगों को 'स्वास्थ्य सुरक्षा', 'स्वास्थ्य एवं योग', तनाव-मुक्त जीवन' आदि विषयों पर जानकारी दी गई।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर

इस यात्रा के दौरान लगभग २५ निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाए गए जहाँ प्रवचन या प्रदर्शनी के माध्यम से रोगियों को स्वास्थ्य की देखभाल करने की शिक्षा दी जाती, उनके स्वास्थ्य की

बेलगाम – 'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' के अन्तर्गत डाक्टर्स रैली के पहुंचने पर नगर के मेयर भ्राता नगेन्द्रा हैबती जी डाक्टर्स का स्वागत कर रहे हैं।

हुबली – 'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित एक समारोह का उद्घाटन डिप्टी मेयर, जगतगुरु, पदमश्री डा० आर०बी० पाटिल जी कर रहे हैं।

जाँच की जाती, उन्हें निःशुल्क चिकित्सा प्रदान की जाती। इस रैली की विशेषता यह रही कि जहाँ-जहाँ भी कैम्पस का आयोजन होता, वहाँ के स्थानीय डाक्टर्स भी पूरा सहयोग देते रहे, वे भी रोगियों की निःशुल्क रूप से जाँच आदि करते जिससे डाक्टर्स का जो मूल गुण सेवा-भाव और सहानुभूति होता है, वह सभी में और अधिक विकसित हुआ।

प्रचार एवं संचार माध्यमों द्वारा सहयोग

इस पूरी यात्रा के मध्य प्रचार माध्यमों का बहुत सराहनीय सहयोग रहा। मैसूर, दावनगिरी, हुबली, बेलगाम और बीजापुर में तो प्रेस कान्फ्रेन्स रखी गई थी जहाँ कहीं ५, कहीं ७, कहीं १० पत्रकारों ने भाग लिया और कई समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में कार्यक्रम का विस्तृत विवरण प्रकाशित किया। लेकिन कई अन्य स्थानों-जैसे बैंगलोर, गोवा, सांगली, ओसमानाबाद, हैदराबाद, वर्धा आदि-पर प्रेस कान्फ्रेन्स नहीं हुई लेकिन अनेक समाचार पत्रों ने इस अभियान का समाचार अपने पत्र में छापा। इस प्रकार लगभग ४५ समाचार पत्रों ने इस कार्यक्रम को अपने पत्र में मुख्य स्थान दिया। कुछेक मुख्य पत्रों के नाम इस प्रकार है – बैंगलोर में द हिन्दु (The Hindu), प्रजावाणी (Prajawani), इण्डियन एक्सप्रेस (Indian Express), दावनगिरी में दावनगिरी टाइम्स (Dawangiri Times), अमर भारती (Amar Bharti) आदि, हुबली में संयुक्त कर्नाटक (Sanyukt Karnataka) तथा अन्य स्थानीय पत्र। बेलगाम के कार्यक्रम को पी०टी०आई० के संवाददाता एवं ऑल इण्डिया रेडियो के प्रतिनिधि ने कवर किया।

इस प्रकार इस रैली की अन्य अनेक विशेषताओं के साथ एक मुख्य विशेषता यह रही कि अभी तक इन्हें लगभग ७ स्थानों पर सिविक रिसेप्शन (Civic Reception) मिला। अतः यह रैली तीव्र गति से अपनी मंज़िल की ओर बढ़ती जा रही है।

डॉक्टरों की रैली – त्रिवेन्द्रम से दिल्ली

(३ मार्च ८८ से १७ मार्च ८८ तक प्राप्त सेवा समाचार)

इस रैली का प्रारम्भ २ मार्च को त्रिवेन्द्रम में आयोजित एक प्रेस कान्फ्रेस से हुआ जिसमें लगभग १० पत्रकारों ने भाग लिया। इस के उद्घाटन कार्यक्रम में **त्रिवेन्द्रम विश्वविद्यालय के उपकुलपति महोदय**, डा० थाम्पी तथा आयुर्वेद कालेज के प्रिंसिपल माननीय अतिथियों के रूप में उपस्थित थे। डा० थाम्पी ने आज की वर्तमान समस्याओं एवं चिकित्सकों के व्यवसाय के वर्तमान व्यापारिक स्वरूप के बारे में चर्चा करते हुए रैली में भाग लेने वाले डाक्टर्स के बारे में कहा – "हमें इस प्रकार निःस्वार्थ सेवा करने वाले डाक्टरों पर नाज है।" अपने वक्तव्य के अन्त में उन्होंने कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभ कामनाएँ भी व्यक्त कीं।

त्रिवेंद्रम – केरल राज्य के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता शन्मुगा दास जी को 'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' से अवगत कराने के पश्चात ब्र० कु० किरण बहन उन्हें साहित्य भेंट कर रही हैं।

त्रिचूर में कार्यक्रम

त्रिचूर में वहाँ के स्थानीय न्यूरो सर्जन (Neuro surgeon), डा० राधाकृष्णन ने **ऑल इण्डिया रेडियो स्टेशन** पर दिल्ली से पधारी हुई डा० ऊषाकिरण, गुजरात से पधारे हुए डा० अनिल एवं विदेश से रैली में भाग लेने के लिए पधारी हुई ब्रह्माकुमारी बहन पीयटा वेलेन्टाइन का १५ मिनट का इन्टरव्यु लिया। उन्होंने पूछा कि अन्य प्रचलित योग के प्रकारों एवं राजयोग में क्या अन्तर है? राजयोग के वैज्ञानिक पहलु कौनसे है?, इत्यादि। सन्तोषजनक उत्तर पाकर वे बहुत प्रसन्न हुए। इसी प्रकार १३ मार्च को **मद्रास** में भी लगभग १७ मिनट का **रेडियो इन्टरव्यु** लिया गया।

त्रिचूर के अतिरिक्त, कोचीन, वेलोर, कृष्णगिरी, मद्रास आदि में कार्यक्रम

रैली के दौरान विभिन्न शहरों के अनेक विद्यालयों,

त्रिवेंद्रम – 'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' कार्यक्रम के अन्तर्गत त्रिवेन्द्रम से आरम्भ होने वाली डाक्टर्स रैली को ब्र० कु० लक्ष्मी बहन सम्बोधित कर रही हैं।

महाविद्यालयों, मेडिकल कालेजों, टेक्नोलोजिकल इन्स्टीच्यूट्स में, रोटरी क्लबों तथा लायन्स क्लबों में, अस्पतालों में एवं विभिन्न संस्थाओं में प्रवचनों के कार्यक्रम के साथ-साथ जन-साधारण की सेवा के लिए भी एवं सार्वजनिक स्थानों पर भी सभाओं का आयोजन किया गया जिससे हजारों की संख्या म विद्यार्थियों, अध्यापकों, शिक्षाविदों, डाक्टरों, नर्सों तथा अनेक गणमान्य व्यक्तियों की सेवा हुई। उदाहरण के तौर पर, क्वीलोन (Quilon) में एस०एन० वीमेन्स कालेज (S.N. Womens College) एवं फातिमा कालेज के २५०० महिला विधार्थियों को 'स्वास्थ्य एवं योग' के बारे में जानकारी दी गई। कोचीन के एक स्कूल, हिन्दी प्रचार सभा में गीतों व कहानियों के माध्यम से 'स्वास्थ्य एवं राजयोग' के बारे में समझाया गया। इस कार्यक्रम में लगभग २०० बच्चों ने भाग लिया। इस प्रकार कुल मिलाकर लगभग ५० **स्थानों पर प्रवचनों के कार्यक्रम हुए** जिससे लगभग १४,००० लोग लाभान्वित हुए। ये प्रवचन कई विषयों पर हुए जिनमें से मुख्य विषय रहे – 'रैली का उद्देश्य-सम्पूर्ण स्वास्थ्य चेतना जागृति ;'बुरी आदतों एवं चिन्ताओं से मुक्ति पाने का साधन-राजयोग' ;**'स्वास्थ्य और योग', 'तनाव-मुक्त जीवन','राजयोग का वैज्ञानिक पहलु',** 'स्वास्थ्य एवं शाकाहार' आदि-आदि। ये प्रवचन अत्यन्त प्रभावशाली रहे। जैसे कोचीन में ऑल इण्डिया वीमेन्स एसोसिएशन की आलवे स्थित शाखा में रखे गए कार्यक्रम में प्रवचनों के बाद वहाँ की प्रेजीडेन्ट व सेक्रेटरी ने सभा में उपस्थित गणमान्य महिलाओं के साथ मिलकर प्रस्ताव (Resolution) पारित किया कि बच्चों की परीक्षाओं के बाद उनकी एसोसिएशन में ही राजयोग की क्लासेज शुरु करवाई जायें। **इसी प्रकार, मद्रास में स्टेनली अस्पताल में आयोजित प्रवचनों के कार्यक्रम से प्रभावित होकर अस्पताल के डीन (Dean),प्रोफेसर्ज आदि अगले दिन सेवाकेन्द्र पर पधारे तथा आगे भी इसी प्रकार के कार्यक्रम रखने की इच्छा व्यक्त की।** ऐसे ही मद्रास मे शार अस्पताल में विदेश से पधारी हुई ब्रह्माकुमारी ब्रहन पीयटा वेलेन्टाइन के योगी जीवन के अनुभव को सुनकर प्रभावित हुए डॉक्टर्स ने कहा – "अभी तक हम आध्यात्मिकता में विश्वास नहीं रखते थे लेकिन आपने आकर हमें जगाया। हमें जागृत किया और हमें आध्यात्मिकता का जिज्ञासु बना दिया।"

प्रवचनों के साथ-साथ स्थान व समय की सुविधा अनुसार सुस्वास्थ्य **प्रदर्शनियो** का भी आयोजन किया गया। चित्रों के माध्यम से समझाने पर विद्यार्थी, डाक्टर्स तथा जन साधारण भी सहज रीति 'स्वास्थ्य एवं योग' के बारे में समझ लेते। लगभग ४५ स्थानों पर प्रदर्शनियाँ की गई।

समाज-सेवा का एक अन्य रूप स्थान-स्थान पर **स्वास्थ्य-निरीक्षण कैम्प** लगाए गए जिनमें स्वास्थ्य-सुरक्षा के बारे में जानकारी देने के साथ निःशुल्क दवाइयाँ भी वितरित की गई। इस प्रकार **त्रिचूर में, वेलोर में, मद्रास में तथा नैलोर में, ४ शिविर लगाए गये** जिससे लगभग ५०० व्यक्तियों को लाभ मिला।

वेलोर मे डाक्टर्स रैली के आगमन पर आयोजित 'निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर' में ब्र० कु० डा० किरण बहन तथा अन्य रोगियों का परीक्षण करते हुए दिखाई दे रहे है।

कुछेक शहरों में–**त्रिवेन्द्रम, कोचीन, कृष्णागिरी, वेलोर एवं मद्रास में प्रेस कान्फ्रेन्स रखी गई** जिसमें क्रमशः १०, १०, २५, १५ एवं ८ पत्रकारों ने भाग लिया और कई समाचार पत्रों में इनके समाचार भी छपे। उदाहरण के तौर पर ६ मार्च को **दिनमलर** में, ७ मार्च को कोयम्बतूर में **दिनकरण** में, ८ मार्च को कोचीन में **इण्डियन एक्सप्रेस** व **'हिन्दु'** में, ८ मार्च को ही **मालै मुरसु** एवं **दिनकरण** में, १८ मार्च को **मालै मुरसु** में समाचार छपे जिनमें भी स्वास्थ्य चेतना अभियान के विषय में जानकारी दी गई।

कई स्थानों पर विशिष्ट व्यक्तियों से भी मुलाकात की गई। त्रिवेन्द्रम में **केरल के स्वास्थ्य मन्त्री, स्वास्थ्य सचिव, स्वास्थ्य उपनिदेशक, उपकुलपति तथा सभी कालेजों के प्राध्यापकों से मुलाकात हुई।** कोयम्बतूर में कई प्रसिद्ध डॉक्टर्स के साथ तथा **मद्रास** में अनेक विशिष्ट व्यक्तियों के साथ स्नेह-मिलन (Get-Together) का कार्यक्रम रखा गया।

स्थान-स्थान पर इस रैली का स्वागत शहर के गणमान्य व्यक्तियों **लायन्स क्लब** के सदस्यों, **जन युवक मण्डल, पंचायत युनियन अध्यक्ष**, संसद सदस्य, **रोटेरियनस** आदि द्वारा हुआ।

इस प्रकार यह रैली जिस सुन्दर लक्ष्य को लेकर चली थी, उसे पूरा करते हुए अपनी मंजिल की ओर बढ़ रही है। दिल्ली पहुँचने तक तो अन्य और भी बहुत सेवायें हो जायेंगी।

डॉक्टरों की रैली – भुवनेश्वर से दिल्ली

(५ मार्च ८८ से २४ मार्च ८८ तक प्राप्त सेवा समाचार)

अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान के भुवनेश्वर से दिल्ली तक आने वाले ग्रुप का उद्घाटन ५ मार्च को, भुवनेश्वर के सूचना भवन के भव्य सभागृह में, उड़ीसा के राज्यपाल भ्राता विश्वंभरनाथ पाण्डे जी द्वारा सम्पन्न हुआ। मान्यवर राज्यपाल भ्राता पांडे जी ने उद्घाटन भाषण में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अनेक जन-कल्याण कार्यक्रमों की सफलता की प्रशंसा करते हुए इस अभियान के विषय में कहा – "यह अभियान समयानुकल एवं विश्व में अपनी प्रकार का प्रथम कार्यक्रम है। वर्तमान समस्यापूर्ण विश्व में इतना महान कार्य करने का संकल्प इस संस्था ने लिया है, अतः इसके पीछे अवश्य ही कोई ईश्वरीय शक्ति है। विनाशोन्मुख विश्व को नये सुखमय संसार में बदलने का कार्य इसी संस्था द्वारा ही सफल हो सकेगा।" उद्घाटन के पूर्व इस अभियान दल ने निकटवर्ती ग्रामों वनमालीपुर, बांकी, तुलसीपुर में चिकित्सा शिविरों का आयोजन करके अनेक रोगियों का इलाज किया एवं स्थानीय होम्योपैथिक मैडीकल कालेज में 'सम्पूर्ण स्वास्थ्य' (Holistic Health) विषय पर एक सम्मेलन का आयोजन किया।

भुवनेश्वर से रवाना होकर यह रैली कटक पहुँची। कटक में ६ और ७ मार्च को रेवनशा कालेज, एस०सी०बी० मेडीकल कालेज, 'नर्सिंग कालेज में विभिन्न विषयों – 'चिकित्सा में योग' (Meditation in Medical Practice) 'शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य में तालमेल' (Maintaining a Balance among Physical, Mental, Social and Spritual dimensions of Health) एवं 'व्यसनों की गुलामी की सीमा और इनसे मुक्ति पाने का साधन' (Magnitude of drug addiction and its remedies) पर प्रवचन हुए। इन प्रवचनों से प्रभावित होकर नर्सिंग कालेज के होस्टल में ७ दिन का कोर्स रखने का अनुरोध किया गया और रेवनशा कालेज के स्नातकोत्तर के विद्यार्थी एवं शिक्षकगण सेवाकेन्द्र पर राजयोग की शिक्षा लेने आ रहे हैं। कालेजों के अलावा एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था, द युनिवर्स (The Universe) में एक डाक्टरों के सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार का विषय था – 'तनाव-मुक्त जीवन कैसे जियें ?' शहर के गणमान्य व्यक्तियों – कमिश्नर, रोटरी गवर्नर, मेडीकल कालेज के प्रिंसिपल तथा अन्य अनेक व्यक्तियों ने भी इन कार्यक्रमों में भाग लिया।

भुवनेश्वर – 'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' कार्यक्रम के अन्तर्गत भुवनेश्वर से दिल्ली तक निकलने वाली डाक्टर्स रैली को महामहिम भ्राता बी० एन० पान्डे, राज्यपाल, उड़ीसा राज्य सम्बोधित कर रहे हैं।

इस प्रकार यह अभियान दल १५ शहरों से होता हुआ २४ मार्च को इलाहाबाद पहुँचा। सभी शहरों में विभिन्न प्रकार की सेवाओं के कार्यक्रम हुए। लगभग ३६ स्थानों पर प्रवचनों के कार्यक्रम हुए। ये प्रवचन मेडीकल एसोसिएशन (Medical Associations) बार एसोसिएशन (Bar Associations). इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्स (Indian Chamber of Commerce). हस्पतालों, मेडीकल कालेजों, नर्सिंग कालेजों आदि में हुए। बड़ौदा से इस रैली में भाग लेने के लिए पधारी डॉ० निरंजना द्वारा कलकत्ता में गोयका कालेज ऑफ कामर्स (Goenka College of Commerce) में किये गए प्रवचन को पश्चिमी बंगाल (West Bengal) के टी०वी० स्टेशन पर प्रसारित किया गया। प्रवचन मुख्यतः इन विषयों पर थे – तनाव का स्वास्थ्य पर प्रभाव (Effect of stress on Health), तनाव मुक्त जीवन कैसे जियें ? (How to lead a stress-free life), स्वास्थ्य के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं में परस्पर सन्तुलन (Creating a balance among physical, mental, social and spiritual dimensions of health)., चिकित्सा व्यवसाय में राजयोग का प्रयोग (applications of Meditation in Medical Practice). व्यक्तित्व विकास के लिए विज्ञान एवं आध्यात्म (Science and spirituality for personality Development)

बोकारो और रांची में वहाँ के मुख्य समाचार पत्र 'आवाज', 'आज' और 'न्यु रिपब्लिक' के प्रेस रिपोर्टर्स द्वारा रैली में भाग लेने

वाले डाक्टर्स का इन्टरव्यु लिया गया। राँची में वहाँ के रेडियो स्टेशन पर भी डाक्टर्स का इन्टरव्यु लिया गया। राँची कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ टेलीविजन पर भी लगभग ५ मिनट तक दिखायी गयी। पटना के १८ समाचारपत्रों में – हिन्दुस्तान, नवभारत, द टाईम्स ऑफ इण्डिया, आज, पाटलिपुत्र टाइम्स, द इण्डियन नेशन आदि – स्वास्थ्य जागृति अभियान के समाचार प्रकाशित हुए। पटना के इण्डियन मेडीकल एसोसिएशन में आयोजित स्वास्थ्य सम्मेलन का उद्‌घाटन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, श्री दिलकेश्वर राम ने किया। इस सम्मेलन में विशिष्ट अतिथियों के रूप में उपस्थित थे-राजस्व मंत्री श्रीमति उमा पाण्डेय तथा श्रम एवं प्रशिक्षण मंत्री डा० विजय कुमार। वाराणसी में आयोजित प्रेस कान्फ्रेस में प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त 'नार्दरन इण्डिया' (Northern India), दैनिक अमृत, प्रभात, जयदेश, आज, जागरण, जनवार्ता, सन्मार्ग, जनमुख, के पत्रकारों ने भाग लिया। वाराणसी में आकाशवाणी-वाराणसी से, बंबई से पधारे हुए डा० गिरीश पटेल की १० मिनट की रेडियो वार्ता 'योग एवं स्वास्थ्य' पर रिकार्ड की गई और बाद में उसे प्रसारित किया गया।

इस प्रकार इस रैली ने भी सेवाओं के विविध स्वरूप अपनाये और अनेकों को अपनी योग्यताओं से लाभ पहुँचाया।

कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की सम्मतियाँ

प्रिंसिपल, एस०सी०बी० मेडीकल कालेज, कटक – इस संस्था द्वारा किया गया यह प्रयास वर्तमान समय की आवश्यकता के अनुकूल है और अगर सम्पूर्ण स्वास्थ्य का ज्ञान कुछ प्रतिशत लोगों को भी मिल जाए, तो भी जनता के लिए यह लाभप्रद होगा।

डा० नन्दी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, बालेश्वर – अधिकतर मनोवैज्ञानिक रोग तनाव-जन्य ही होते है। अतः इन बढ़ते हुए रोगों के निवारण के लिए दवाइयों से अधिक मानसिक शान्ति की

कटक – 'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' के अन्तर्गत डाक्टर्स रैली के आगमन पर आयोजित निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में डा० चितरंजन, डा० निरंजना रोगियों का निरीक्षण करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

पटना – 'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' के अन्तर्गत आयोजित 'सुस्वास्थ्य सम्मेलन का उद्‌घाटन बिहार राज्य के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता दिलकेश्वर जी मोमबत्ती जलाकर कर रहे है।

आवश्यकता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय पूरे विश्व-भर में राजयोग का प्रशिक्षण देकर इन तनाव-जन्य रोगों को दूर कराने में सहयोगी बन रहा है।

ये अपने उद्देश्य में पूर्ण सफल हों-ऐसी मेरी शुभ भावना है।

डा० बी०सी० बेहेरा, मेडीकल सुपरिन्टेन्डेन्ट एवं डी०एम०ओ० बारीपदा – अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान के अन्तर्गत रखे गये कार्यक्रम में भाग लेकर मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिन डाक्टर्स ने इस कार्यक्रम में भाग लिया, उन्होंने अवश्य ही इन राजयोगी डाक्टरों द्वारा निदान के लिए बताए गए उपायों से लाभ लिया होगा और वे अवश्य इन्हें अपने चिकित्सा के क्षेत्र में इस्तेमाल करेंगे जिससे सर्वशक्तिमान परमात्मा की रचना – मानव जाति की वे सुन्दर तरीके से सेवा कर सकेंगे।

डा० बी०पी० मिश्रा, बोकारो स्टील सिटी – प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' हमारे भारत की नागरिक और ग्रामीण जनता के लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगा। रैली में भाग लेने वाले डाक्टर्स की इस कार्य के प्रति समर्पणमयता तथा राजयोग की विधि सिखाने का उमंग अवश्य ही श्रेष्ठ फल दिखायेगा।

सिविल सर्जन, दरभंगा – आधुनिक सभ्यता की एक विशेष देन है – तनाव, जो अनेक मनोवैज्ञानिक रोगों को जन्म देता है और जिसका निदान लोगों को इन बीमारियों का कारण समझाने से हो सकता है। इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा चलाया गया स्वास्थ्य चेतना अभियान वास्तव में वर्तमान समय की माँग है। इसमें हर वर्ग के लोगों को सहयोगी बनना चाहिए, ऐसी मेरी शुभ इच्छा है

डाक्टरों की रैली-बम्बई से दिल्ली

(१२ मार्च, ८८ से २५ मार्च, ८८ तक प्राप्त सेवा समाचार)

अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान के अन्तर्गत बम्बई से दिल्ली तक आने वाली रैली का उद्घाटन कार्यक्रम महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री भ्राता शंकर राव चौहान के निवास स्थान में स्थित सभागृह में लगभग ३०० डॉक्टर्स एवं प्रमुख व्यक्तियों के मध्य हुआ।

बम्बई में उद्घाटन कार्यक्रम

इस अवसर पर मंच पर उपस्थित थे—मुख्य अतिथि के रूप में **महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री भ्राता शंकर राव चौहान, कार्यक्रम की अध्यक्षा राजयोगिनी दादी जानकी जी** (सहप्रशासिका, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय), **माननीय अतिथि डॉ० पी०वी० साटे, डीन (Dean) जे०जे० अस्पताल, डॉ० कालके, प्रसिद्ध हृदय रोग-विशेषज्ञ एवं भूतपूर्व डीन (Dean) डॉ० गिरीश पटेल, बम्बई, डॉ० डेविड गुडमैन, लन्दन, जर्मनी से पधारे भ्राता स्टीफन नागेल एवं माऊण्ट आबू से पधारी हुई ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन।** कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्जवलित करके किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में मुख्यमंत्री महोदय ने कहा—"जन-जागृति की शुभ भावना से यह महान् कार्य करने का जो बीड़ा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने उठाया है, उसकी सफलता के लिए मेरी शुभ कामनाएँ तथा पूरा सहयोग है।" उन्होंने कहा कि "वास्तव में धर्म तथा विज्ञान को आपस में टकराव में न आकर मिलकर कार्य करना चाहिए और ये वैज्ञानिक समाज की सच्ची सेवा कर सकते है। मेरा उनसे यही कहना है कि यदि वे भगवान को मन से याद करके अपना कार्य करेंगे तो अपने कर्त्तव्य को ठीक तरह निभा सकेंगे·····।" अन्त में उन्होंने यह भी कहा कि "अपने निवास स्थान से इस शुभ कार्य का उद्घाटन करने में उन्हें बहुत प्रसन्नता हो रही है।" इस प्रकार अन्य वक्ताओं ने भी अपनी शुभ भावनायें प्रगट की तथा भविष्य में अपनी ओर से पूर्ण सहयोग देने की भावना प्रदर्शित की।

इस अवसर पर **आकाशवाणी तथा दूरदर्शन का स्टाफ भी उपस्थित था तथा अगले दिन सॉंय ७.३० बजे दूरदर्शन में उद्घाटन का पूरा दृश्य दिखाया गया।** इस कार्यक्रम से पूर्व ही ९ मार्च को **जामे जमशेद,** १० मार्च को **दैनिक विश्वामित्र** में स्वास्थ्य चेतना अभियान के उद्घाटन का समाचार छपा। १४ मार्च को **'नवशक्ति'** में फोटो सहित इस कार्यक्रम का समाचार छापा गया। १६ मार्च को **इण्डियन एक्सप्रेस** में स्वास्थ्य जागृति के उद्घाटन कार्यक्रम का समाचार छपा। बाद में अन्य समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ।

बम्बई—'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' के अन्तर्गत आयोजित 'डाक्टर्स रैली' के शुभारम्भ समारोह में महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री भ्राता एस० बी० चवन जी उद्बोधन कर रहे हैं। उनके दायीं ओर ब्र० कु० दादी जानकी जी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ई० वि० वि० विराजमान हैं।

बलसाड़ में कार्यक्रम

१३ मार्च को यह **रैली बलसाड़ में पहुँची।** बलसाड़ में मैडीकल एसोसिएशन में प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिसमें लगभग २० डॉक्टर्स ने भाग लिया। दो विषयों पर प्रवचन किये गये—(i) स्वास्थ्य के चारों पहलुओं—शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक—में तालमेल कैसे रखा जाए? (How to create balance among physical, Mental, Social and spiritual Health?), (ii) चिकित्सा विज्ञान में योग का महत्त्वपूर्ण स्थान Practical applications of meditation in medical practice)। फिर उसी स्थान पर सुस्वास्थ्य प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया जिसको देख व समझ कर डाक्टर्स बहुत प्रभावित हुए।

बलसाड़ के समीप २ गाँवों में—वेगचिपा ग्राम एवं भीलपुरी ग्राम में **'स्वास्थ्य जागृति शिविर' भी लगाए गये जहाँ उन्हें स्वास्थ्य जागृति की शिक्षा के साथ-साथ निःशुल्क दवाइयाँ भी वितरित की गई।** वेगचिपा ग्राम में **लायन्स क्लब** के सहयोग से तथा भीलपुरी ग्राम में संरपच के द्वारा ये कैम्प लगवाये गये थे। इनसे क्रमशः ३०० एवं २०० रोगियों ने लाभ लिया। बेगचिपा ग्राम में सुस्वास्थ्य प्रदर्शनी के चित्रों के माध्यम से भी स्वास्थ्य सुरक्षा पर ध्यान खिंचवाया गया।

बिलीमोरा और उसके निकट के स्थानों पर ईश्वरीय सेवा

१४ मार्च को बीलीमोरा में पहुंचने पर ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेवाकेन्द्र पर ही **रोटरी क्लब, लायन्स क्लब** तथा **इण्डियन मैडीकल एसोसिएशन,** बीलीमोरा के अध्यक्ष महोदयों द्वारा रैली में भाग लेने वालों का स्वागत किया गया। फिर उन्हें रैली के उद्देश्य से अवगत कराया गया तथा सुस्वास्थ्य प्रदर्शनी के चित्र भी दिखाए गए। उसके बाद समीप के ही एक ग्राम के प्राथमिक हेल्थ सेन्टर में **प्रदर्शनी** के द्वारा **सम्पूर्ण स्वास्थ्य की परिभाषा** समझाई गई। इस प्रदर्शनी एवं प्रवचन से लगभग २५ व्यक्तियों ने लाभ उठाया जिसमें ३ डॉक्टर्स, टी०डी०ओ० बलसाड़ एवं गाँव के सरपंच भी शामिल थे। प्राइमरी हैल्थ सेन्टर के मेडीकल आफीसर मिलीन्द उपासनी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा – "मेरे विचार में यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय जो पुनीत कार्य कर रहा है, इसमें भारत के प्रत्येक व्यक्ति को तन, मन, धन से सहयोगी होना चाहिए। मेरी यही मंगल कामना है कि इसका लाभ हर व्यक्ति को मिले।"

बीलीमोरा में दोपहर को एक बी०एड्० (B.Ed.) स्तर के टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम में ११० स्नातकोत्तर विद्यार्थी तथा २० प्राध्यापक महोदय उपस्थित थे। कालेज के प्रिंसिपल महोदय ने रैली का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की सफलता के लिए अपनी मंगल कामना व्यक्त की। श्रीरंग शिक्षण महाविद्यालय के प्रिंसिपल भ्राता भट्ट जी ने अपने वक्तव्य में कहा – "बम्बई से प्रारम्भ किये गये अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान, जिसमें भाग लेने वाले डॉक्टर्स ने **'मानसिक तनाव'** के विषय पर बहुत महत्त्वपूर्ण और उपयोगी मार्गदर्शन दिया, इसके लिए मै अपनी इस संस्था की ओर से उनका धन्यवाद करता हूँ। अपने प्रयास में इन्हे सफलता मिले –ऐसी मेरी शुभ इच्छा है।

बलसार–'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' के अन्तर्गत डाक्टर्स रैली के यहां पहुंचने पर आयोजित एक कार्यक्रम में भारतीय मेडिकल संघ के डाक्टर्स तथा अन्य भाई बहनें एक ग्रुप फोटो में दिखाई दे रहे हैं।

सेवाकेन्द्र पर ही रात्रि ८ बजे **इण्डियन मेडीकल एसोसिएशन,** बीलीमोरा के अध्यक्ष के सहयोग से डाक्टरों के लिए एक कार्यक्रम रखा गया। यह कार्यक्रम इण्डियन एसोसिएशन के अध्यक्ष की अध्यक्षता में ही सम्पन्न हुआ। इसमें २५ डॉक्टर्स ने लाभ लिया। अध्यक्ष महोदय ने अपने विचार प्रगट करते हुए कहा कि "बीलीमोरा में इण्डियन मेडीकल ऐसोसिएशन की शाखा की ओर से मैं इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय तथा राजयोग फाउन्डेशन का आभार मानता हूँ कि जिसने तनाव-मुक्त जीवन पर इतनी सहज रीति से समझ आ जाने वाले प्रवचनों का कार्यक्रम आयोजित किया।"

नवसारी में डाक्टरों द्वारा स्वास्थ्य-चेतना कार्यक्रम

अगले दिन ये यात्रा चली **नवसारी की ओर**। नवसारी पहुँचने पर रैली का स्वागत गाँव के सरपंच ने फूलों द्वारा किया। वहाँ ३ स्थानों पर प्रवचनों के कार्यक्रम हुए – (१) नवसारी के **सिविल अस्पताल** में **'तनाव का स्वास्थ्य पर प्रभाव और इसका हल'** पर प्रवचन हुआ जिससे २५ डॉक्टर्स तथा ५० पैरा मैडीकल (Para medical) सदस्यों ने लाभ लिया। (२) दूसरा प्रवचन नवसारी के **कृषि महाविद्यालय** में **'मानसिक तनाव और इसका निदान'** विषय पर प्रवचन हुआ। रैली के उद्देश्य के विषय पर भी प्रकाश डाला गया। कालेज के प्रिंसिपल डॉ० अरुण भाई शाह ने इस अभियान की सफलता के लिए अपनी शुभ कामनाएँ व्यक्त की। (३) तीसरा कार्यक्रम रात्रि को सार्वजनिक सभा के रूप में रखा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता **रोटरी आई हस्पताल** (Rotary Eye Hospital) के डा० अशोक शरीफ ने की। उसने कहा – "यह कार्य निःस्वार्थ भावना से किया जा रहा है और इसके लिए ब्रह्माकुमारी संस्था सचमुच धन्यवाद की पात्र है। उन्होंने भविष्य में अपनी ओर से सहयोग देने की भी इच्छा व्यक्त की।" इस कार्यक्रम में लगभग ४० प्रसिद्ध डाक्टर्स विद्यमान थे।

नवसारी के समीप **पारडी ग्राम** में **'स्वास्थ्य सुरक्षा शिविर'** लगाया गया। २०० रोगियों ने लाभ उठाया। इस कैम्प में ३ प्रसिद्ध डॉक्टरों ने भाग लिया।

सेवाकेन्द्र पर **प्रेस कान्फ्रेन्स** भी रखी गई। **'गुजरात मित्र', 'प्रताप'** और **'संदेश'** समाचार पत्रों के पत्रकारों ने इसमें भाग लिया और अभियान के बारे में चर्चा की।

२० मार्च को यह **रैली गांधीनगर पहुँची**। रैली का स्वागत गाँधी नगर के **सिविल हस्पताल** के डॉ० सी०बी० शाह ने किया। फिर सेवाकेन्द्र पर **गुजरात के स्वास्थ्य मन्त्री भ्राता बल्लभ भाई पटेल** एवं **सिविल सर्जन** डॉ० सी०बी० शाह से मुलाकात हुई। उन्हें रैली के उद्देश्य एवं तब तक प्राप्त रैली के अनुभवों से अवगत कराया गया। उन्होंने रैली में भाग लेने वालों के द्वारा किये गये

शेष पृष्ट ३१ पर

'सम्भावना' को समाप्त कर अब 'सुनिश्चितता' को धारण करो

ब्र० कु० नवल विजयवर्गीय, भीलवाड़ा (राज०)

सम्भावना शब्द अनिश्चितता का प्रतीक है और सुनिश्चितता का अभिप्रायः है कि यह बात या सफलता हुई ही पड़ी है। सुनिश्चितता में आत्म-विश्वास की झलक होती है। अभी हम अपने कल्प बाद मिले सर्वशक्तिवान बेहद के बाप की गोद में बैठे है। त्रिकालदर्शी परमात्मा द्वारा जो भी भविष्य के प्रति उच्चारित महावाक्य है उनमें सुनिश्चितता भरी पड़ी है।

हम शिवबाबा की मीठी प्यारी पालना में पलने वाले ब्रह्मा-वत्स तनिक इस बात पर विचार करें कि हमने अपने पुरुषार्थी जीवन में कहीं सम्भावना शब्द को तो स्थान नहीं दे रखा है ? मीठे प्यारे बापदादा के महावाक्यों के प्रति हमारा निश्चय कहीं सम्भावना तक ही तो सीमित नहीं है ?

हां, यह बात हो सकती है कि हम बाहर से भले अपने भविष्य के प्रति निश्चयबुद्धि दिखाई देते हों परन्तु इस बात को हमें बड़ी शांति से व गहराई से अपने दिल के कोने-कोने में टटोल कर देखना होगा कि हर परिस्थिति में हमें अपने प्रति, बापदादा के प्रति सुनिश्चितता है ? कहीं किसी भी ज्ञान-बिंदू पर हमारा दिल सिर्फ सम्भावना तक ही तो टिका हुआ नहीं है ? अगर किसी भी बात में हमारा दिल सिर्फ सम्भावना को देखता है तो इसका अर्थ है – कहीं न कहीं दिल में संशय का समावेश है। तब **यह बात सुनिश्चित है कि संशय का एक कीड़ा भी अन्दर में रह गया तो वह पूरी बीमारी का रूप ले लेगा और हमारे अच्छे भले चल रहे पुरुषार्थ को रूग्ण कर देगा। इसीलिए तो हमारे मीठे, प्यारे बाबा हमेशा कहते है – 'बच्चे, इस ज्ञान को धारण करने के लिए मुख्य बात जो चाहिए वह है १०० % निश्चय। हर बात में निश्चय।'** अगर बाबा के हर डायरेक्शन में हमारा १००% निश्चय है तो इसका अर्थ है – हमारा पुरुषार्थ भी १०० % क्लीयर व करेक्ट है।१०० % निश्चय वाला सम्भावना या संशय से बहुत दूर होगा, जहाँ संशय की परछाई भी नहीं पहुंच सकती है।

बाबा कहते है – 'मीठे सिकीलधे बच्चो!, मैं तुम्हारे लिए बहिश्त की सौगात लेकर आया हूँ। मीठे बच्चे, टीचर के रूप में मैं तुम्हें पहला सबक देता हूँ कि अपने को आत्मा सुनिश्चित करो।' इस पहले सबक पर ही तुम्हें हर संभावना से परे जाना है। यद्यपि आज के इस अति तमोगुणी वातावरण में हर तरह बाह्यमुखता और देहाभिमान का अत्याधिक बोलबाला है। परन्तु हमें सर्वशक्तिवान्, ज्ञान-सागर, पतित-पावन परमात्मा शिव ने यह शाश्वत् सत्य बताया कि वास्तव में हम इस शरीर से अलग चैतन्य, ज्योति-स्वरूप, बिन्दीरूप आत्मा है। इस साकार लोक, सूक्ष्म लोक से भी पार मूलवतन की रहवासी हम आत्माएं इस साकार लोक के रंगमंच पर आकर अपना सुनिश्चित पार्ट बजा रही हैं। हम ओरिजनल रूप में आए थे और ओरिजनल रूप में ही वापस जाना है। बीच में जो कुछ भी था वह एक सुखान्त-दुःखान्त का ड्रामा था। अगर इस निश्चय को हमने अपने पुरुषार्थ का आधार बना लिया तो हमारे पुरुषार्थ में आने वाली कमजोरी की हर सम्भावना खत्म हो जायेगी और यह सुनिश्चितता आयेगी कि यह समय अब वापस अपने घर लौटने का है। हमारा बेहद का विदेही बाप हम बच्चों को भी विदेही बनाकर वापस घर ले जाने आया है। पूरे कल्प के सृष्टि-ड्रामा में पार्ट से निवृत होकर बाकि एक्स्ट्रा समय हम प्यार के सागर बाप से मिलने में मग्न होकर जन्म-जन्मान्तर की प्यास बुझाते हुए जीवन-मुक्ति का वर्सा ले रहे हैं।

दूसरी संभावनाएं जो आती हैं कि 'क्या महा विनाश वास्तव में होगा ? क्या वास्तव में स्वर्णिम दुनिया आयेगी ? क्या वास्तव में नई दुनिया सम्पूर्ण निर्विकारी होगी ?' – ये ऐसे प्रश्न हैं जो हमें न चाह कर भी कहीं न कहीं सम्भावना के घेरे में ले आते हैं और बाहर से चाहे हम कितने ही निश्चय बुद्धि नजर आवें लेकिन हमें यह देखना है कि उपरोक्त प्रश्नों के प्रति क्या हम सुनिश्चित हैं ? अव्यक्त बापदादा हर बार हम बच्चों को जोर देकर कहते हैं कि 'बच्चे, तुम तो कल्प-कल्प के विजयी रत्न हो। तुम्हारी विजय तो हुई ही पड़ी है।' फिर **हमारे पुरुषार्थ में ढीलापन (कमजोरी) क्यों आता है? क्योंकि बाबा के महावाक्यों को सुनकर भी हम सम्भावनाओं की लहरों में लहराते रहते है,** इसलिये हमारा पुरुषार्थ सरल नहीं बन पाता है। सम्भावना वो शब्द है जो हमें न इधर का रहने देता है, न उधर जाने देता है।

इसलिए, सर्व शक्तिवान बेहद बाप की मायाजीत रूहानी सन्तानो ! इस संगमयुग के हीरे तुल्य जीवन में 'सम्भावना' शब्द को सदा के लिए विदाई दे दो। जो कुछ बाबा का फरमान मिला है, उससे हम यह श्री नारायण अथवा श्री लक्ष्मी बनने वाले है – इस सुनिश्चितता को धारण करो। यह ज्ञान किसी जन्म-मरण के चक्र में आने वाले देहधारी गुरू–गुंसाई द्वारा प्रदत ज्ञान नही है, यह सर्वशक्तिवान, पतितपावन, ज्ञानसागर, सर्व आत्माओं के अति प्यारे बेहद के बाप शिवबाबा, जो बड़े गुप्त वेश में इस पतित सृष्टि पर पधारे हुए है और अपने बच्चों के लिए नई स्वर्गिक दुनिया रच रहे हैं, यह उनका दिया गया ज्ञान और फरमान है। इससे हम देवता बनेंगे, आने वाली नई दुनिया के स्वराज्य अधिकारी बनेंगे। सारी सृष्टि सम्पूर्ण निर्विकारी होगी और स्वर्ग इसी धरा पर उतर आयेगा – यह सुनिश्चित बात है, अटल सत्य है। इसमें किसी प्रकार की कोई सम्भावना बाकी नहीं है। ●

"कुल की मर्यादायें–पालन करेंगी कन्यायें और मातायें"

ब्र० कु० सूरजमुखी, रूद्रपुर

किसी भी कुल का आधार कुल मिलाकर घर के मुखिया बाप व दादा सहित घर परिवार के सभी सदस्यों के स्नेह-सुख-सम्पन्न संगठन को ही कहा और माना जाता है। हम यहाँ भी एक ऐसे कुल की बात कर रहे हैं–जिसमें मुख्य बाप व दादा स्वयं परमात्मा और उनकी सबसे पहली रचना प्रजापिता ब्रह्मा हैं। ये कुल ईश्वरीय-कुल कहलाता है। ब्रह्मा द्वारा दी गई परमात्म-शिक्षायें इस कुल की मर्यादायें हैं। इस कुल में जन्म देने वाला भी सम्पूर्ण पावन है और जन्म लेने वाली हर आत्मा पवित्र ब्रह्मामुखवंशाली ब्राह्मण अथवा ब्राह्मणी कहलाती है।

कितना विचित्र है ये सृष्टि नाटक ! कितना विचित्र है इसका रचयिता !।छिपे हुए रहस्यों को, वेदों के भेदों को, शास्त्रों के अर्थ, गीता-रामायण के सार को, भागवत-लीला को धरा पर समझाने जबकि भगवान स्वयं आ पहुँचा हो।

जिन्होंने ईश्वरीय बोल अपने कानों से सुने होंगे ..... परमपिता शिव भगवानुवाच जिन आत्माओं के सम्मुख हुआ है, उन्हें अवश्य गौरव होगा अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य पर । और जो आत्मायें इन ईश्वरीय प्रेरणाओं को सुनकर, ... मधुर शिक्षाओं को सुनकर जीवन को बलिदान कर गईं, उनके भाग्य की सराहना स्वयं परमात्मा ही करते हैं जिनमें ज्यादा इस सर्वश्रेष्ठ भाग्य को प्राप्त करने वाली निकली हैं —कन्यायें और मातायें .....।

ये विधाता का विधान भी है, तो दुनिया के लिए रहस्य भी। कई तो ऐसा भी सोचते होंगे और कहते भी हैं कि यहाँ सबसे ज्यादा संख्या बहनों की है। ..... इसका भी कारण है कि इनका उद्धार मनुष्य नहीं करेंगे ..... न ही किसी ने अभी तक ऐसा उपदेश व शिक्षा दी है जिस शिक्षा से नारी के चरित्र का उत्थान हो तथा वह एक घर की माँ ही नहीं बल्कि जगतमाता के रूप में इस विराट सृष्टि नाटक में पार्ट बजा सके।

निःसन्देह, माताओं-बहनों का सम्मान करने वाले, उन्हें पवित्रता का वरदान देकर ज्ञानअमृत का कलश देने वाले परमात्मा ही हो सकते हैं। तभी ही नारी से लक्ष्मी पहले, नर से नारायण पीछे माना जाता है। जिस कार्य को किसी ने किया ही नहीं, वे उस कार्य को करने की शिक्षा कैसे दे सकते हैं? न ही कहीं ऐसा भी देखा होगा जो काम करे बाप और नाम हो बच्चों का। **दुनिया में तो काम करते चेले, नाम गुरु-महात्मा का होता है, मेहनत करते विद्यार्थी, नाम पढ़ाने वाले का होता है, सुधरते बच्चे तो नाम माँ-बाप का होता है। लेकिन यहाँ तो यह सब कुछ करते हैं स्वयं करन-करावनहार भगवान् लेकिन नाम-मान होता है बच्चों का .....काम वही करते केवल नाम कराते हैं.....वो भी उनका जिनका नाम किसी की नजरों में नहीं होता।**

ओह !ये कन्यायें और मातायें ..... इन आत्माओं को देखकर किसे नहीं गौरव होगा? ..... ये परागयुक्त ..... दिव्यगुणों की सुगन्ध से भरे ..... चैतन्य पुष्प हैं .....कौन नहीं इन्हें देखकर अपना दुःख दर्द भूल जाता होगा जो इस विकारों रूपी दुर्गन्ध से भरे संसार में चहुँ ओर ईश्वरीय गुणों की सुगंध फैला रही हैं। ये पवित्र कन्यायें दुनिया को दिशाएं दिखा रही हैं– घर वापस चलने की। इनका समर्पित होने का यही लक्ष्य है कि सभी को ईश्वरीय पैगाम मिल जाये, सब पावन बनकर भगवान् के पावन प्यार के पात्र बन जायें। विषय-विकारों की गहरी खाई से निकालने वाला, नरक कुण्ड में गिरने से पहले ही बचाने वाला कोई मनुष्य तो नहीं होगा ना? क्योंकि कोई भी मनुष्य किसी को पवित्र रहने की सहज शिक्षा नही दे सकता है । अपने पावन जीवन से अनेको का पावन जीवन बनाना ही इनकी विशेषता है। ईश्वरीय याद में रहकर सदा ही आगे बढ़ना, हर ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करना और सभी को आत्मिक दृष्टि से भाई-भाई रूप में देखना ही इनकी पहली मर्यादा है।

बात उस समय की है जब गरीब-निवाज परमात्मा नूतन सृष्टि को रचने आये तो पहली दृष्टि इन पर डाली। क्योंकि दाता की, विधाता की नजर में सबसे गरीब यही कन्यायें और मातायें थीं। निर्धन को सबसे धनवान, ... गरीब को साहूकार बनाने वाले गरीब-निवाज बाप की यही विश्व-परिवर्तन की पहली विधि रही। निर्धन का अर्थ यहाँ किसी निर्वस्त्र या भूखे या बेघर से नहीं है। जिनका अपना कुछ नहीं है– देह सहित सब कुछ पराया ..... वे यही कन्यायें और मातायें हैं। इनमें भी कन्यायें और ही गरीब हैं। तन भी पराई अमानत और मन को भी उसी अनुसार ढालना होता है जहाँ उनका सम्बन्ध अपने परिवार से दूसरे परिवार में हो जाता है, उन्हीं रीति-रस्मों को निभाना होता है। धन तो कन्याओं का होता ही नहीं .....।इसलिए पहली नजर भगवान् की इन पर पड़ी।

सच है– सोये हुए अपने पुत्रों को जितना सहज माँ जगा

सकती है, कोई और नहीं। इसलिये माताओं को ज्ञान कलश देकर अज्ञान निंद्रा में सोई आत्माओं को जगाने की जिम्मेवारी दी। ये सत्य है····· इस जिम्मेवारी को मानेगी दुनियां सारी·····किसी भी कुल का, घर का उत्तरदायित्व जितना माताओं का है उतना पुरुषों का नहीं। ये उत्तरदायित्व घर के वातावरण को पवित्र बनाने के लिये, बच्चों के उचित विकास व महान् शिक्षाओं के लिये है।

देखो, आज वही आत्मायें काँटों के जंगल को ज्ञानामृत से सींच गुलशन बना रही हैं····· इस विश्व धरातल पर पावनता की गंगा बहा रही हैं। सर्वशक्तिमान परमात्मा ने इन्हें इतने उच्च शिखर पर लाकर खड़ा कर दिया ····· इतनी सर्वोच्च स्थिति पर टिका दिया कि ····· भक्तों ने भी ·····पहाड़ों पर जाकर देवियों के दर्शन किये जो इन्हीं चैतन्य देवियों के जड़ चित्र यादगार रूप में हैं। ये धरती के चैतन्य चिराग हैं, कुलदीपक हैं।

अब आवश्यकता है बस-इतनी कि ये सदैव जागते रहें। लौ-से-लौ मिलाते रहें। इन्हें कोई तूफान बुझा नहीं पायेगा– ये साहस तो इनका अमर है····· परन्तु इन दीपकों को सदैव शुद्ध संकल्पों के घृत की आवश्यकता है। तो यही दीपक ईश्वरीय कुल को रोशन कर देंगे।

भगवान् की आशाओं के हे चैतन्य चिरागो !····· ईश्वरीय प्रेरणाओ !····· तुम पर नाज है उसे जिस पर तुमने अपना सर्वस्व स्वाहा किया है····· बस तुम सदैव श्रीमत पर चलती रहना, उसी के पावन प्यार में पलती रहना जिसने समस्त विश्व की करोड़ों आत्माओं में से तुम्हें योग्य समझा है·····तुम्हें प्रत्यक्ष किया है कि ये कन्यायें और मातायें ही पालन करेंगी– 'ईश्वरीय कुल की मर्यादायें'····· तुम्हें प्रोत्साहन देने वाले कितने असंख्य भाई-बहनें हैं····· तुम्हें आगे बढ़ाने वाले ने तुम्हें आगे कर दिया है कि तुम्हें देखकर तुमको ऐसा बल देने वाले को लोग सहज ही जान जायेंगे····· बस तुम भगवान् की इन उम्मीदों को साकार कर देना····· उसका असीम प्यार तुम्हारी राह में, तुम्हारी हिम्मत में मदद जरूर करेगा। उसे निश्चय है– विश्व को पावन करेंगी ये पावन चैतन्य गंगाये–कन्यायें और मातायें। ●

वर्तमान में जीवन जियो

ब्र० कु० सतीश कुमार, माऊण्ट-आबू

बीती तो बीती, कल भी बीत जायेगा।
आज को आबाद कर ले, जीवन बन जायेगा।।

सुख के हों दु:ख के दिन तो बीत जाने हैं,
कर्मों की पूंजी अपने साथ रह जाने हैं।
किया था जो पाया है, करेगा सो पायेगा,
आज को आबाद कर ले ·······

अन्तर में झांक कर पता लगा ले,
अपनी भूलों पर पश्चाताप कर ले।
परमपिता से कह दे क्षमा हो जायेगा–
आज को आबाद कर ले ·······

बीते पलों को अपना शिक्षक बना ले,
अच्छा बनने की शिक्षा तो ले ले।
प्रायश्चित के जल से दाग धुल जायेगा,
आज को आबाद कर ले ·······

सोचकर ये क्या हुआ? होना विकल है,
'होगा कल क्या?'–बनाता मन को निर्बल है।
हीरे जैसा यह जीवन लौट के न आयेगा,
आज को आबाद कर ले ·······

कविता

गीता-ज्ञान की महिमा

ब्र० कु० रामप्रसाद (रेडियो सिंगर), बैतूल

भटक जाता है जब कोई, जीवन की राहों में
लगा लेते गले बाबा, छुपाकर अपनी बाहों में
करे पतितों को ये पावन, स्वर्ग बनता मन भावन
समाये पुण्य का दामन, ये गीता-ज्ञान बाबा का·····

मिल जाता गीता ज्ञान जिसे, चमके जैसे तारा
समा जाती है ये खुशियां, बहे जब ज्ञान की धारा
सारी दुनिया में रोशन है, यही एक ओम का नारा
भरे हिम्मत जवानों में, कमी न आए खजानों में
बढ़कर है सभी दानों में, ये गीता-ज्ञान बाबा का·····

लगा ले नैन से कोई, तो ज्योति उसकी बढ़ जाये
जो अमृत ज्ञान का पीले, तो सुख शांति भर जाये
महान् बनता है जग में, जो गीता-ज्ञान अपनाये
ये अमृत है नहीं पानी, अव्यक्त बाबा की वाणी
करे हम पे मेहरबानी, ये गीता - ज्ञान बाबा का·····

समस्या आ जाती जीवन में, हो जाती ज्ञान से ही हल
ज्ञान से ही जीवन है, मगर मरने को है एक पल
करोड़ों की कमाई छोड़, कमाई ज्ञान की है असल
ये तोड़े सभी के बन्धन, करे सबको ये आकर्षण
ये मेरे गीत का दर्शन, ये गीता-ज्ञान बाबा का·····

समयानुकूल पुरूषार्थ से सौगुणा फल की प्राप्ति

ब्र०कु० सन्तोष, सतना (म० प्र०)

सृष्टि ड्रामा चक्र में चैतन्य आत्मा, जड़ प्रकृति के सहयोग से अपना अनादि अविनाशी पार्ट बजाती है। इस पार्ट के परिणामस्वरूप आत्मा और प्रकृति दोनों परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं जिससे आत्मा की स्थिति एवं प्रकृति के स्वरूप में परिवर्तन की एक निरन्तर प्रक्रिया गतिशील रहती है। इस परिवर्तन को व्यक्त करने के लिये तीन अवस्थाओं का उल्लेख प्रमुख रूप से किया जाता है। वह है- (१) सतोप्रधान, (२) रजोप्रधान एवं (३)तमोप्रधान अवस्था। इसको दूसरे शब्दों में आदि, मध्य तथा अन्त की अवस्था भी कह सकते हैं। चैतन्य आत्मा एवं जड़ प्रकृति दोनों को ही उक्त तीनों अवस्थाओं से होकर गुजरना पड़ता है। सर्व आत्माओं में सिर्फ एक आत्मा ऐसी है जो इन अवस्थाओं से होकर नहीं गुजरती है। वह आत्मा अपनी स्थिति में सदा अचल, अडोल एवं अपरिवर्तित रहती है। यह आत्मा **परम आत्मा** के नाम से विश्व-विख्यात है।

उपरोक्त परिवर्तन की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप में इतनी धीमी गति से होती है कि इसका बोध सामान्यतः एक निश्चित अन्तराल के बाद ही हो पाता है। इस अन्तराल को व्यक्त करने के लिये **'समय' रूपी नए आयाम की योजना की** गई है। इस 'समय' के माप के लिये सेकेण्ड, मिनट, घंटे, दिन, महीने, वर्ष की इकाई निश्चित की गई है।

उक्त परिवर्तन की प्रक्रिया अथवा समय की गति सामान्यतः रैखिक प्रतीत होती है परन्तु वास्तव में यह चक्रीय क्रम में होती है। इसलिये दिन, रात, ऋतु एवं युगों की पुनरावृति होती है। बिना चक्रीय क्रम के पुनरावृति सम्भव नहीं है। समय के इस क्रम के मुख्यतः तीन भाग किए गए है-(१)भूतकाल, (२) वर्तमान काल, (३) भविष्य काल। तीनों स्थितियों को मिलानें वाले क्रम को जाने बिना समय को यथार्थ रूप मे नही पहचाना जा सकता है। **भूतकाल से वर्तमान का और वर्तमान का भविष्य से गहरा सम्बन्ध है।** इसको समझने के लिये परिवर्तन की गुह्य गति को जानना होगा।

परिवर्तन मुख्यतः दो प्रकार से होते हैं। एक होता है समय के द्वारा परिर्वतन, दूसरा होता है पुरूषार्थ के द्वारा परिवर्तन। समय द्वारा होने वाली परिवर्तन की प्रक्रिया को हम पुरूषार्थ द्वारा नियन्त्रित कर सकते हैं। पुरूषार्थ की इस विशेषता के कारण इसमें समय को परिवर्तित करने की क्षमता है। इसी प्रकार समय भी पुरूषार्थ की गति को प्रभावित करता है। इस सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए अगर हम परमात्मा पिता द्वारा दिए गए सृष्टि ड्रामा चक्र के ज्ञान पर विचार करें तो यह स्पष्ट आभास होता है कि पुरुषार्थ का समय से गहरा सम्बन्ध है। समयानुकूल पुरुषार्थ करने वाला अन्य पुरुषार्थियों से सहज ही आगे बढ़ जाता है। यहाँ पर समय का अर्थ सिर्फ अवकाश से नहीं बल्कि अवसर से युक्त अवकाश लिया गया है। अवसर से युक्त समय में पुरूषार्थ करने से वह सहज एवं कई गुणा होकर फलीभूत होता है जबकि वही पुरुषार्थ अगर साधारण समय में किया गया हो तो वह साधारण रूप में (अर्थात् जितने का उतना) ही फलीभूत होता है। इससे सिद्ध होता है कि अवसर अवकाश के मूल्य को बढ़ाता है। इसलिये अवसर को पहचानकर उसके सदुपयोग द्वारा अपने समय को मूल्यवान् बनाना अपने आप में एक बड़ी विशेषता है। इसके लिये प्रमुख रूप से **'परखने की शक्ति'** की आवश्यकता है। इसी सन्दर्भ में अगर हम **पुरूषोत्तम संगमयुग** के समय पर विचार करें तो यह स्पष्ट होता है कि इस दृष्टि से हम इस युग को **अवसर युग** भी कह सकते है। इस युग में श्रेष्ठ कर्म करने का जो अवसर प्राप्त होता है वह अन्य किसी युग में प्राप्त नहीं हो सकता है। इसी अवसर के फलस्वरूप हम श्रेष्ठ कर्म द्वारा अपना सर्वश्रेष्ठ भाग्य बना सकते हैं।

अतः दिव्य बुद्धि द्वारा वर्तमान संगमयुग के समय को पहचानकर अगर हम उसके महत्व के अनुकूल पुरुषार्थ करें तो धरा पर स्वर्णिम समय अर्थात् सतयुग की स्थापना में हम महत्वपूर्ण रोल (भूमिका) अदा कर सकते हैं। कहा भी जाता है कि **'जो अपने समय को मूल्यवान् बनाता है, समय उसे मूल्यवान् बना देता है।'**

शिवभगवानुवाच –

- **बच्चे, निन्दा करने वाले को भी अपना मित्र समझो**
- **शुभ-चिन्तक बनो और शुभ-चिन्तन में रहो**

'लौकिक बाप की अलौकिक शिक्षाएं'

ब्र०कु० आत्मप्रकाश, आबू-पर्वत

मनोहर लाल अस्पताल में अन्तिम श्वासें गिन रहा है। उसका बेटा, सुमित उससे मिलने आता है।

मनोहर लाल सुमित को अन्तिम शिक्षाएँ देता है।

मनोहर लाल—बेटा सुमित, तुम्हें मालूम ही है—मुझे ३० वर्ष हो गये ईश्वरीय ज्ञान में चलते हुए। बस, तुम्हारा जन्म होते ही हमें भगवान् मिले थे। तुम अति भाग्यशाली आत्मा हो। अब मुझे बापदादा सूक्ष्मवतन में बुला रहे हैं। मेरी यही अन्तिम इच्छा है कि मेरी जगह तुम भरो। राजयोगी तो तुम हो ही, जैसे मैंने तन-मन-धन सेवा में लगाया, तुम भी लगाना।

सुमित—हाँ पिताजी, आप हमें ऐसे श्रेष्ठ रास्ते पर लाये। हम जीवन भर आपकी शिक्षाओं पर चलते रहेंगे। हम तीनों भाई जैसे प्रेम से रहते है, वैसे ही रहेंगे। रोज ज्ञान-योग का अभ्यास भी करेंगे तथा लौकिक कारोबार को भी ठीक से चलायेंगे।

मनोहर लाल—बेटा, तुम हमारे कुल-दीपक हो। तुम पर हमें गर्व है परन्तु अपने अनुभवों से मैं तुम्हें कुछ कहना चाहता हूँ। यदि तुम मेरी शिक्षाओं को ध्यान में रखोगे तो मन चाही मुराद हासिल करोगे।

सुमित—पिताजी, आपकी शिक्षाएँ मैं जीवनभर याद रखूंगा, आप आज्ञा करें।

मनोहर लाल—बेटा, अपनी कमाई का १०% ईश्वरीय सेवा में लगाना। परन्तु यह सेवा गुप्त हो, एक हाथ दे तो दूसरे हाथ को पता भी न चले। मन में कभी यह संकल्प भी न आये कि मैंने इतना किया। उसके बदले में नाम, मान की सूक्ष्म कामना भी न हो। ऐसा करने से तुम्हें अन्यन्त आन्तरिक सुख प्राप्त होगा।

सुमित—मुझे स्वीकार है पिता जी।

मनोहर लाल—बेटा, सदा याद रखना कि अहंकार मनुष्य के पतन का कारण है। चाहे तुम कितने भी बड़े बन जाओ, कितनी भी कलाएँ तुम्हें प्राप्त हो, करोड़ों की सम्पत्ति के तुम मालिक बन जाओ, परन्तु सब कुछ ईश्वरीय देन ही समझना। यदि अहंकार रहा तो साधनों के होते भी तुम्हें सुख नहीं मिल सकेगा।

सुमित—यह बात मुझे बहुत काम आयेगी, पिताजी। यह शिक्षा मे सदा साथ रखूंगा।

मनोहर लाल—बेटा तुम्हें पता ही है कलियुग समाप्ति की ओर है। अतः अब आये हुए **प्रभु से सम्पूर्ण प्राप्ति करना। कौड़ियों के पीछे अमृतवेले का योग व क्लास कभी भी मिस नहीं करना। नहीं तो यही कौड़ियाँ अन्त में तुम्हारे पश्चाताप का कारण बनेंगी।** रीस न करना लेकिन ज्ञान और योग की ही रेस करना।

सुमित—पिता जी, सन्तोष ही मेरे जीवन का श्रृंगार होगा।

मनोहर लाल—बेटा, जीवन में सभी का सम्मान करना। छोटे हों या बड़े, गरीब हों या अमीर, सभी को प्रभु की सन्तान समझ सम्मान देना। सम्मान देने वाला ही महान् बनता है तथा सम्मान का पात्र बनता है। भूलकर भी कटु वचनों से किसी का निरादार नहीं करना, क्योंकि निरादार को मनुष्य सबसे बड़ा आघात मानता है।

सुमित—शिरोधार्य है मुझे। हमारे कुल की यही मर्यादा रहेगी।

मनोहर लाल—बेटा, सभी दिन अच्छे नहीं होते। न जाने चलते-चलते जिन्दगी में कब विघ्न आ जाएं। इसलिए पुण्यों की पूँजी खूब जमा करना। पुण्य ही मनुष्य की सच्ची निधि है। कभी भी किसी को दुःख देने का ख्याल भी न करना। दुःखी मनुष्य की आह बहुत बुरी होती है। पुण्य ही समय पर मनुष्य को सहारा देते हैं।

सुमित—बहुत अच्छी बात है पिता जी मैं इतना पुण्य जमा करूँगा कि सारा परिवार उससे लाभान्वित हो।

मनोहर लाल—बेटा, तुम अभी सुकुमार हो। चारों ओर माया का आकर्षण है। परिवार में तुम ही बाल ब्रहमचारी हो। स्वप्न में भी कभी यह पथ न छोड़ना-यह मेरी आन्तरिक अभिलाषा है। तुम हमारे कुल को बल देने वाले हो। तुम सच्चे भीष्म हो।

सुमित—पिता जी, मै आपके समक्ष धर्मराज परमात्मा को साक्षी रख सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य की सौगन्ध लेता हूँ। किसी भी कीमत पर मैं इस प्रण से पीछे नहीं हटूंगा। और अनेक कुमारों के लिए आदर्श प्रस्तुत करूँगा।

मनोहर लाल—और बेटा, कभी भी छोटी-मोटी बात में किसी से उलझना नहीं, किसी से भी टक्कर नहीं लेना। सदा झुककर चलने वाला विनम्र व्यक्ति ही महान् बनता है। खुद कष्ट सहकर भी दूसरों को आगे बढ़ाना-यही तुम्हारा पथ हो।

सुमित—पिताजी कभी-कभी मै टकराव में आ जाता हूँ, आज से इसका भी त्याग करता हूँ।

मनोहर लाल—सुमित बेटा... तुम श्रीमत पर कोई महान् कार्य अवश्य करना। सदा सबको ही मदद करना। कोई भी तुम्हारे द्वार से खाली न जाए। दूसरों के दुःख मिटाना ही अपना श्रेष्ठ कर्म समझना।

सुमित—आपका आशीर्वाद मेरे साथ हो पिता जी।

मनोहर लाल—बेटा, कभी भी यह नही सोचना कि कोई हमें आगे बढ़ाये। अपने बल से, अपनी योग्यताओं से आगे बढ़ो। आगे तो हमें दूसरों को बढ़ाना है।

सुमित—पिताजी, मुझे भी यही अच्छा लगता है...

शेष पृष्ठ ३२ पर

"उठो पार्थ ! गाण्डीव सम्भालो"

ब्र०कु० राज कुमारी, मजलिस पार्क, दिल्ली

शान्त ! पवित्र ! उज्ज्वल ! धूप सुगन्धित श्वेत तपस्या कक्ष ! उसमें पद्मासन लगाए श्वेतवस्त्रधारी, एकान्त में स्वचिन्तन का आनन्द ले रहा योगी। योग में प्रवाहित विचार तरंगे– "मैं··· शुद्ध··· आत्मा··· शान्ति के··· सागर··· में···। मैं··· शान्त स्वरूप···"

स्वचिन्तन न जाने कब परचिन्तन में बदल गया और विचार तरंगे यूँ मुड़ गईं– "शान्त स्वरूप··· !हूँ, कहाँ हूँ मैं शान्त स्वरूप? ··· हूँ ! मैं··· कितना पुरुषार्थ करता हूँ··· शुद्ध अन्न लेता हूँ··· अमृतवेले भी उठ कर योगाभ्यास करता हूँ··· परन्तु··· परन्तु··· परन्तु··· ओफ्फोह !··· मन टिकता ही नहीं··· पहले जैसा··· रस··· अब क्यूँ नहीं··· आता?··· मेरी जिज्ञासा··· शान्त··· नहीं··· होती··· मैं खुश··· सन्तुष्ट··· नहीं··· ऐसे कब तक चलेगा? मैं इस जीवन में कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकता। अब तो मैं न इधर का रहा न उधर का रहा। इससे तो पहला जीवन अच्छा था। कितना मजे (Enjoy) करता था··· मनमर्जी का खाता था, पीता था, घूमता था··· बेकार ही फँस गया मैं तो··· पर··· यहाँ आए बिना भी तो नहीं रह सकता मैं··· कशिश होती है इधर की··· यह कशिश और कहीं टिकने भी तो नहीं देती··· यहाँ आता हूँ तो मन भटकता है··· बाहर जाता हूँ तो भी मन नहीं लगता··· बाहर भी सब बेकार लगता है··· फिर मन इधर खिंचता है··· इस ज्ञान ने बाँध लिया है मुझे··· पर··· मैं सन्तुष्ट कैसे होऊँ?··· मैं···"

'हा ! हा ! हा !' सहसा एक ज़ोरदार अट्टहास गूंजा। योगी चौंक उठा ! चारों ओर देखा··· 'यहाँ तो कोई नहीं दिखाई देता, फिर यह अट्टहास कैसा?'

'हा ! हा ! हा !···' पुनः वही गूँज।

'कौन हो तुम···?'

'ओहो ! डर गए क्या? हा ! हा ! हा !··· डरो नहीं, मैं हूं तुम्हारे अपने ही अन्तः करण की आवाज़···।'

योगी साश्चर्य– 'मेरे अपने ही अन्तः करण की आवाज़··· !··· क्या मतलब···?'

'क्यूं समझे नहीं क्या? तो सुनो – मैं हूँ तुम्हारे अन्तराल की सत्य पुकार। तुम्हारे अवचेतन मन की सत्य सत्ता हूँ। तुम्हारी ही शुद्ध भावना (Good-spirit) हूँ। मैं दूसरी कोई नहीं तुम्हारी खुद की···।'

योगी बीच में ही– 'क्या कहना है तुम्हें?'

'मैं तुम्हें वो कहूँगी जो तुम्हें कोई कह नहीं सकता। मुझसे तुम्हारा कुछ भी छिपा नहीं है। मैं तुम्हारे अन्दर की सभी पर्तें खोल दूँगी···।'

बीच में ही– 'कौन सी पर्त?'

'जो तुम खुद से भी छिपाते हो। सुनना नहीं चाहते। हा ! हा ! हा !··· तुम कभी भी खुश रह नहीं सकते। सुख पा नहीं सकते···?'

'क्यूँ?'

'क्योंकि तुम खुशी चाहते ही नहीं। तुम भटक रहे हो। अवज्ञाएँ करते हो···।'

'खुशी कौन नहीं चाहता···?'

'तुम··· तुम··· तुमने प्रत्येक से सदैव यही पूछा कि क्या आप सन्तुष्ट हैं? तुमने कभी किसी से खुशी के अनुभव नहीं पूछे?'

योगी कुछ स्मरण करते हुए– 'पर मैंने खुशियों और ज्ञान-योग के अनुभव भी तो सुने है।'

'अवश्य ! परन्तु संशय और अविश्वास से।'

'और असन्तुष्टता के अनुभव···?'

'वो रसलिप्त होकर।'

'नहीं ! नहीं !'

"अहम् त्याग कर स्वीकार करो। तुम अन्य आत्माओं की असन्तुष्टता की गहराई में जाने लगे। तुम्हारे श्वाँस- संकल्प परमात्मा से हट कर अन्य बातों में जाने लगे। आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास···।"

'मैं फँस गया···?'

'हाँ।'

'कैसे?'

'याद रखो, हर असन्तुष्ट आत्मा सत्य नहीं हुआ करती। न ही ज्ञान-योग असन्तुष्ट करता है।'

'तो फिर असन्तुष्टता आई कहाँ से?'

"असन्तुष्टता आती है अपने गलत संस्कारों के कारण और मायावी बातें सुनने से दोष-दृष्टि हो जाने के कारण।"

''तो दोष तो फिर है न सभी में।''

'हाँ है, कोई भी आत्मा सम्पूर्ण नहीं। पर··· तुम नहीं दूर कर सकते अन्य आत्माओं के दोष···।'

'क्यूँ ?'

'क्योंकि प्रथम तो तुम खुद ही मायावी आत्माओं के प्रभावाधीन होकर दूषित व्यवहार करने लगते हो।···'

'और दूसरा··· ?'

'दूसरा यह कि यह काम सिर्फ परमपिता परमात्मा शिव का है। जिसने यज्ञ रचा है, वह कमियाँ भी ठीक करना जानता है।'

'तो मेरा काम क्या है ?'

'तुम्हारा काम है स्वयं के दोष पहले तो स्वीकारना, फिर दूर करना।'

'कैसे करूँ ? दूर होते नहीं।'

'हा !हा !हा ! होते नहीं या तुम दूर करना ही नहीं चाहते ?'

''कौन है जो अपनी कमियाँ दूर करना नहीं चाहता ?''

'जब भी तुम्हारी कमी सामने आई तो तुम उसे छुपा कर अन्य विषय ले बैठे। समय की नाजुकता और पुरुषार्थ की दुहाई देकर, ऊँची-ऊँची बाते करके तुमने सदैव चलाकी से टापिक बदल दिया।'

'तो क्या मै बुद्धिजीवी नहीं हूँ ?'

'बिल्कुल नहीं···।'

योगी चौककर– ''तो क्या हूँ ?''

'तुम हो परमत जीवी। करते तो हो अपनी बुद्धि के ही अनसार, पर··· बुद्धि तुम्हारी परमत के अनुसार ही चलती है।'

'नहीं, मै परमत जीवी नहीं। इसीलिए तो मुझे भेड़चाल पसन्द नहीं।'

'भेड़चाल किसे समझते हो ?'

'हूँ ! सुबह-सुबह उठ कर क्लास में आ जाना। जैसे कहा जाए, वैसे ही बच्चों के माफिक आज्ञाकारी बन कर हाँ जी करते जाना···।'

'बस ! बस ! यही नैगेटिव (उल्टी) सोच छोड़ो। यहाँ कोई किसी को अन्ध श्रद्धा से नहीं चलाता। किसी कुप्रशासन के अधीन बिना सोचे विचारे चलने को भेड़चाल कहते है, परन्तु ईश्वरीय स्नेह वश मर्यादाओं का पालन करना, शुभ भावनाओं से पलना, अपना नैतिक फर्ज समझना भेड़चाल नहीं कहलाता। मर्यादाएँ नियम तो हर संस्थान, हर समाज में होते है, यहाँ तक कि इस मायावी दुनिया में बसने के लिए भी कुछ उनके नियम है। मर्यादा के अधीन तो लौकिक परिवार में भी रहना पड़ेगा। और जरूरी नहीं कि सब कुछ तुम्हारी पसन्द का ही हो। शुक्रिया करो इन नियमों का, सदके इन मर्यादाओं के जो मनुष्य को उच्छृंखल घोड़ा नहीं बनने देती। प्रभु स्नेही बनाती है।'

'तो मै प्रभु स्नेही नहीं हूँ क्या ?'

'प्रभु स्नेही नैगेटिव संकल्प नहीं किया करते।'

'मै नैगेटिव संकल्प नहीं करता···।'

'हा !हा !हा !तुम भूल गए कि मै तुम्हारी अपनी ही सुपर कॉन्सियस हूँ। मुझ से तुम्हारा कुछ भी छिपा नहीं।'

'पर मै लकीर का फकीर नहीं बन सकता। मै किसी को निरुत्साहित (Degrade) होते नहीं देख सकता।'

'क्या तुम्हें किसी ने निरुत्साहित किया कभी ?'

एक मौन और लम्बी श्वास।

बोलो, तुम चुप क्यों हो ? अगर कोई निरुत्साहित लगता है, तो कारण उसके अपने विकारी संस्कार होंगे। अच्छा, लकीर के फकीर न सही, पर क्या कुछ नवीनता भी करके दिखाई तुमने··· ? सत्य ज्ञान के प्रदायक परमात्मा शिव के इस यज्ञ में तुमने धन लगाया··· ?

'नाम-मात्र।'

'और मन-बुद्धि··· ?'

'अपनी रुचि के अनुसार···

'आलोचना की··· ?'

'हाँ। खूब की।'

'बदले में··· ?'

'बदले में प्यार भरी समझानी मिली···।'

'कभी भी तिरस्कार व घृणा मिली हो··· ?'

'नहीं।'

'फिर क्या चाहते थे तुम ? फिर असन्तुष्ट क्यों ?'

'योगी निरुत्तर सा दम साधे रहा।

'तो सुनो !··· मै बताती हूँ।'

'क्या··· ?'

'यही कि तुम असन्तुष्ट क्यों हो ?'

'क्यों ?'

''मायावी बातों की कन-रसना, वृथा भ्रमण और मन्थरा बुद्धि आत्माओं की समझानी ने तुममें मतिभ्रम ला दिया जिससे तुम्हारी परख शक्ति जाती रही और तुम हितैषियों को शत्रु समझने लगे, यथार्थ स्नेहियों से घृणा करने लगे, जिस कारण सत्य जानकारी से वंचित रहे। प्रभु प्रिय पराए लगने लगे और परमात्मा से विमुख करने वाले अपने। जिसके फलस्वरूप···।''

'जिसके फलस्वरूप क्या··· ?'

'जिसके फलस्वरूप आन्तरिक भावना समाप्त हो गई, व्यर्थ

संकल्प चलने लगे। और फिर व्यर्थ संकल्पों के कारण बुद्धि की एकाग्रता न रही जिससे योग में बाधा पड़ने लगी। योग का रस सूख गया···।'

'फिर···?'

'फिर तुम्हारा मन ईश्वरीय परिवार से हटने लगा। तुम्हारा अपना व्यवहार बदल गया। तुम अपने लिए खुद समस्या बन गए और···।'

'और फिर···?'

''फिर तुम दुःखी रहने लगे और दैवी परिवार के निन्दक बन गए··· बड़ों का लाभ न उठा पाए। फिर सही दिशा निर्देश से वंचित होने लगे। निन्दा का पाप, आलोचना का बोझ, मिथ्या अभिमान तुम्हें त्रिशंकु बनाता गया···।''

'फिर···?'

''फिर तुमने सेवा छोड़ी···। सेवा का बल तो गया, साथ ही खाली मन शैतान का घर बन गया। तुम यज्ञ से कट-आफ-से (cut-off, दूर-दूर-से) हो गए···''

'नहीं, मै यज्ञ से कट-ऑफ नहीं हूँ। मुझे तो परमशान्ति (silence) का अनुभव चाहिये। एकान्त पसन्द है, इसलिए मौन में रहता हूँ। साकार बाबा भी एकान्तप्रिय थे। अशरीरीपन का अभ्यास तो एकान्त में ही होता है।'

'हा! हा! हा! यह कलेवर अच्छा है। पर याद रखो कि साकार बाबा एकान्त प्रिय के साथ-साथ कर्त्तव्य-परायण, कर्मठ तथा भविष्य प्रजा के पालनहार भी थे, मर्यादा पुरुषोत्तम थे···। कन्याओं-माताओं का आदर करते थे। शीतल-शान्त थे। उनका··· एक-एक पल यज्ञ-रक्षा में गुज़रा···।'

'मै कुछ 'विशेष' करके दिखाना चाहता हूँ। साधारण आत्माओं की तरह चल कर समय बर्बाद (Waste) नहीं करना चाहता···।'

'हा! हा! हा! तो व्यर्थ चिन्तन में समय आबाद हो रहा है क्या? वाह! विशेष बनना चाहते हो विशेषताओं से हट कर? याद रखो—कर्मयोग ही मनुष्य को विशेष बना सकता है, कर्म छोड़ नहीं। केवल मूँझमयी सोच विशेष कभी नहीं बनाएगी।'

'तो फिर क्या करूँ?'

'विशेषता के लिए मन्सा में विशेष पवित्रता चाहिए।'

'वही तो नही है।'

'उसके लिए मन्सा को व्यस्त रखना भी बहुत आवश्यक है। व्यस्तता के लिए सेवा जरूरी है। सेवा का मेवा गाया हुआ है। मेवा माना शक्ति।'

''ज्ञान समझा दिया, स्थूल काम कर दिया··· मै इस सेवा से अपनी उन्नति नही समझता। इससे पाप भस्म होते है क्या?''

'तो किससे समझते हो?'

'मन्सा सेवा से··· मेरी ऐसी स्थिति हो जो मुझे देखते ही अन्य आत्माओं को··· बापदादा का साक्षात्कार हो जाए। लाइट का अनुभव हो। मुझे देखते ही दूसरे परिवर्तित हो जाएँ···।'

'वाह! कल्पना तो बहुत ही ऊँची है पर···।'

'पर क्या···?'

''पर इसके लिए सत्यता, हार्दिक निर्मलता चाहिए। अन्दर बाहर एक होना चाहिए। इसी सत्य ज्ञान में सुख है, ईश्वरीय याद में आनन्द है, सेवा में शक्ति है··· खुशी है···''

मैंने तो पहले यहाँ बहुत सेवा की। पर मुझे तो खुशी नहीं मिली···।'

'तो जरूर तुम्हारी सेवा की विधि युक्तियुक्त नहीं रही होगी। जरूर इसका कारण तुम्हारे अपने ही संस्कार रहे होंगे। वरना सेवा से खुशी न मिले, यह हो ही नहीं सकता। अच्छा, सेवा करके खुशी न मिली तो छोड़ कर मिली?'

'न, छोड़ कर भी नहीं।'

तो फिर इसका कारण ढूंढो। अच्छा, तुम्हें न सही, मगर जिनकी सेवा की उन्हें तो खुशी हुई होगी। जिनकी खातिरदारी की, उनके हृदय से तो दुआएं निकली होंगी।''

''हो सकता है।''

'अवश्य निकली होंगी। दुआएं प्राप्त करना भी एक बहुत बड़ा पुण्य होता है। विश्व कल्याण चाहते हो न! अन्य आत्माओं की खातिर ही सही। आ जाओ फिर से मैदान में।'

'क्या···?'

''उठो राजीव, गाण्डीव सम्भालो। अपनी विशेषताएँ शिव के यज्ञ में लगाओ तो शिव उन्हें पद्मगुणा चमकाएगा, साथ ही अनेक विशेषताएँ और भी भरेंगी। तुम शिव के यज्ञ की कद्र करो, शिव तुम्हारी कद्र करेगा। कुछ करके दिखाओ। संशय त्यागो। धर्म युद्ध से पीछे न हटो। ज्ञान बाण फिर से चलाओ। देखो, तुम्हारी तरकश के तुणीर कहीं कुंठित न हो जाएँ? अकर्मण्यता भी युद्ध क्षेत्र से हटने जैसा ही है। हर बात में दोष दृष्टि होना भी संशय बुद्धि बनने जैसा ही है। स्थिर बुद्धि बनो। खिलाफत की ललकार भस्म करो। 'कोमा' में मत रहो। याद रखो — कुछ सुकर्म करते रहना ही जीवन है ठहरे पानी में 'काई' (तालाब के पानी की सतह पर उगने वाली हरी घास) जम जाती है। उठो! ज्ञान गंगा बन के बहो। उठो! स्वस्थ बनो! अब कुछ करके दिखाओ।'

शेष अगले अंक में

रतलाम — सेवाकेंद्र पर सुप्रसिद्ध गीतकार कवि प्रदीप जी के पधारने पर ब्र० कु० आशा बहन उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट कर रही हैं।

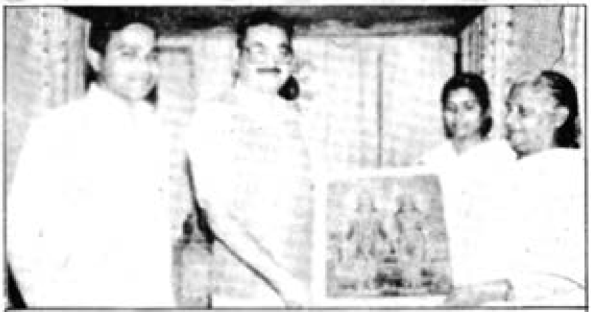

भुवनेश्वर — भ्राता हरीहर प्रसाद महापात्र, आई० ए० एस०, संयुक्त सचिव, गृह विभाग, सेवाकेन्द्र पर पधारे। ब्र० कु० दादी सन्देशी जी उन्हें आने वाली सतोप्रधान सतयुगी दुनिया के मालिक श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण का चित्र भेंट कर रही हैं।

कटक — 'स्वास्थ्य चेतना सम्मेलन' में मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० कमलेश, ब्र० कु० निरुपमा, डा० हाईडी, ब्र० कु० दादी निर्मलशान्ता, बहन मनोरमा महापात्र, सचिव, उत्कल साहित्य समाज (माइक पर), डा० गुणनिधि भूयन, प्रधान, उड़ीसा चिकित्सक संघ, डा० निरन्जन शाह दिखाई दे रहे हैं।

जयपुर — (राजा-पार्क) में 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' का उद्घाटन भ्राता गौरी शंकर दास, महाप्रबन्धक, स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर मोमबत्ती जलाते हुए कर रहे हैं। पंजाब नैशनल बैंक के सहायक महाप्रबन्धक भ्राता ओमप्रकाश व्यास जी तथा ब्र० कु० निर्मला बहन भी मंच पर उपस्थित हैं।

कुरुक्षेत्र — सूर्यग्रहण के अवसर पर आयोजित 'ज्ञानसूर्य आध्यात्मिक मेले' में कुरुक्षेत्र के अतिरिक्त उपायुक्त भ्राता सर्वन सिंह, आई०ए०एस० परिवार सहित पधारे। चित्र में ब्र० कु० उर्मिला बहन उन्हें मेले का अवलोकन करा रही हैं।

पृष्ठ १२ का शेष

ढंग से सदुपयोग नहीं किया गया और भविष्य प्राप्ति पर इसका प्रभाव पड़ेगा ही। इसी प्रकार शरीर रूपी साधन के ठीक न होने पर,बीमार पड़ने पर, थकने पर योग्य मालिक की तरह इसे उमग देने वाली तथा समय पर आराम देने वाली आत्मा इससे ज्यादा कार्य ले पाएगी और फलस्वरूप अधिकतम प्राप्ति होगी। इसी प्रकार धन की शक्ति भी अधिकतम निवेश करने से अधिकतम प्राप्ति होती है।

इस प्रकार संगम पर हम सभी सफल पूंजीपति हैं, सभी रूहानी व्यापार में व्यस्त हैं। दुनियावी व्यापार में भी परिणाम (लाभ) प्राप्ति में समयावधि होती है। पहले कच्चा माल आता है, फिर उत्पादन शुरू होता है, फिर वस्तुओं को तैयार करके बाजार में भेजा जाता है, फिर बिक्री और बचत एकत्रित होकर मालिक के पास पहुँचती है। हमारी प्राप्ति के बीच भी संगमयुग की समयावधि है, अतः इसमें विवेकशील उत्पादक की तरह तीनों शक्तियों (तन, मन, धन) से ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण प्राप्ति करें। □

डॉक्टरों की रैली — अमृतसर से दिल्ली

(६ मार्च, ८८ से २५ मार्च, ८८ तक प्राप्त सेवा समाचार)

अमृतसर, जो कि वर्तमान समय भयभीत करने वाला शहर बन गया है और जिसके कारण वहाँ की जनता के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है, से अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान प्रारम्भ करने की योजना बनाई गई। इस रैली का उद्घाटन ६ मार्च को हुआ और ४ दिन तक अमृतसर शहर के विभिन्न इलाकों की सेवा की गई। सेवाओं के विभिन्न रूप रचे गए। कहीं प्रवचन तो कहीं सुस्वास्थ्य प्रदर्शनी, कहीं वीडियो फिल्म द्वारा तो कहीं अखबारों द्वारा। ७ महाविद्यालयों में, एक मेडीकल कालेज में और ३ सार्वजनिक सभाओं में प्रवचनों के कार्यक्रम हुए, कुल मिलाकर ११ स्थानों पर प्रवचनों के कार्यक्रम हुए। ८ स्थानों पर सुस्वास्थ्य प्रदर्शनी का आयोजन कर जन-जन में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता लाने का प्रयास किया गया। एक प्रेस कान्फ्रेन्स भी रखी गई जिसमें ८ समाचार पत्रों के संवाददाताओं ने भाग लिया।

इस प्रकार अमृतसर में स्वास्थ्य चेतना लाते हुए यह रैली ९ मार्च को बटाला के लिए रवाना हुई। बटाला, जालन्धर, होशियारपुर, लुधियाना, पटियाला होती हुई यह रैली १४ मार्च को चण्डीगढ़ पहुँची। चण्डीगढ़ से रवाना होकर शिमला, अम्बाला… हरिद्वार… पानीपत आदि से होती हुई अब यह सिरसा से भी आगे आ चुकी है। इन शहरों में लगभग ६२ स्थानों पर स्कूल, कालेज, मेडीकल कालेज, अस्पताल, लायन्स क्लब, रोटरी क्लब, इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन तथा सार्वजनिक स्थानों पर प्रवचनों के

फिल्लौर मे डांक्टर्स रैली के आगमन पर आयोजित एक समारोह में ब्र० कु० राजकुमारी बहन भ्राता डॉ० जगदीश पाल सिंह, एस० एम० ओ० को ईश्वरीय सौगात भेंट कर रही है।

अमृतसर से शुरू होने वाली डॉक्टर्स रैली के शुभारम्भ समारोह में मंच पर (दाएं से) ब्र० कु० अमीरचन्द, डॉ० बनारसी दास जी, सरदार सर्वजीत सिंह जी, उपायुक्त, अमृतसर : दादी चन्द्रमणि जी तथा अन्य विराजमान हैं।

कार्यक्रम रहे जिनसे लगभग ७८०० लोगों ने लाभ उठाया। इसके साथ-साथ लगभग ५० स्थानों पर सुस्वास्थ्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया और चित्रों के माध्यम से स्वास्थ्य सुरक्षा एवं उसमें राजयोग के महत्त्वपूर्ण स्थान पर विस्तृत रूप से समझाया गया। इन प्रदर्शनियों को लगभग ५००० लोगों ने देखा, समझा और उनमें कुछ जागृति आई।

प्रैस कानफ्रैन्स

अमृतसर के अलावा जालन्धर में भी प्रेस कान्फ्रैन्स रखी गई। इसमें ६ समाचार पत्रों—इण्डियन एक्सप्रेस (Indian Express), द ट्रिब्यून (The Tribune), वीर प्रताप, पंजाब केसरी, अजीत, पी०टी०आई० (P.T.I.) के पत्रकारों ने तथा ऑल इण्डिया रेडियो, जालन्धर के प्रतिनिधि ने भाग लिया। उन्हें रैली के उद्देश्य से परिचित कराया गया। इसका समाचार पंजाब केसरी में प्रकाशित हुआ तथा ऑल इण्डिया रेडियो पर भी प्रसारित किया गया। लुधियाना में भी २ समाचार पत्रों के संवाददाताओं से भेंट हुई। द ट्रिब्यून (The Tribune) तथा स्थानीय समाचार पत्र में इस अभियान का समाचार प्रकाशित हुआ। उसके बाद सहारनपुर में रखी गई कान्फ्रैन्स में १८ पत्रकारों ने भाग लिया। अभियान का समाचार द ट्रिब्यून (The Tribune), नवभारत, हिमवाणी, मनीश टाइम्स (Manish Times) आदि समाचार पत्रों में छपा। शिमला में ऑल इण्डिया रेडियो, शिमला पर इसका समाचार प्रसारित हुआ। लुधियाना में लुधियाना दूरदर्शन ने भी, इस उपलक्ष्य में आयोजित किये गए सार्वजनिक कार्यक्रम का दृश्य दिखाया। इस प्रकार प्रसार एवं संचार माध्यमों के द्वारा भी सेवा हो गई।

शिमला — 'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित एक विशाल समारोह में ब्र० कु० राज बहन सम्बोधित कर रही हैं। समारोह में उपस्थित डाक्टर्स तथा अन्य मेडिकल कर्मचारी ध्यानपूर्वक सुनते हुए दिखाई दे रहे हैं।

विशिष्ट व्यक्तियों से मुलाकात एवं अभियान के विषय में उनके विचार

अमृतसर में वहाँ के डिप्टी कमिश्नर एवं अमृतसर विश्वविद्यालय के उपकुलपति महोदय से भेंट हुई। जालन्धर में वहाँ के दूरदर्शन के निदेशक से मुलाकात हुई। चण्डीगढ़ में हरियाणा की स्वास्थ्य मन्त्री डा० कमला वर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे राजयोग प्रशिक्षण की बहुत सराहना की और सभा में उपस्थित सभी व्यक्तियों को राजयोग की शिक्षा लेने के लिए प्रेरित किया। चण्डीगढ़ प्रशासन की स्वास्थ्य सेवाओं के निदेशक डा० जे० एस० रत्रा ने कहा कि तनाव का स्वास्थ्य पर जो बुरा प्रभाव पड़ सकता है, उसका हल केवल ध्यान अथवा योगाभ्यास द्वारा ही सम्भव हो सकता है। इनके साथ-साथ इस कार्यक्रम में उपस्थित थे—पंजाब स्टेट, युनिवर्सिटी टैक्स्ट बुक के निदेशक डा० आत्मजीत सिंह जी, ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्य प्रवक्ता एवं प्योरिटी पत्रिका के मुख्य सम्पादक भ्राता जगदीश चन्द्र जी, युनिसेफ के प्रोग्राम आफीसर डा० मनु एन० कुलकर्णी जी एवं विद्यालय की सहप्रशासिका राजयोगिनी दादी चन्द्रमणी जी। आये हुए सभी अतिथियों ने वर्तमान समय में इस अभियान की आवश्यकता पर बल दिया तथा आगे के लिए सहयोगी बनने का आश्वासन दिया। सोलन विश्वविद्यालय के उपकुलपति महोदय से भी मुलाकात हुई। हिसार में सिविल हस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा० कुलदीप कुमार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—"**ऐसे कार्यक्रम समय प्रति समय होते रहने चाहिएँ क्योंकि ये प्रत्येक व्यक्ति के लिए लाभप्रद हैं। मानसिक तनाव से सहज मुक्ति पाने का साधन यहाँ से मिलता है।**" जीन्द में म्युनिसिपल कमिश्नर डा० हरी चन्द, जीन्द के डिस्ट्रिक्ट सेशन जज माननीय ए० पी० चौधरी, बाल रोग विशेषज्ञ एवं इण्डियन मेडीकल एसोसिएशन के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० छतर सिंह, सिविल हस्पताल, जीन्द के डा० रमेश जी से भी भेंट हुई। उन सभी ने राजयोग को चिकित्सा, स्वास्थ्य सुरक्षा, तनाव से मुक्ति पाने तथा जीवन में शान्ति का अनुभव करने का एक महत्त्वपूर्ण साधन बताया। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा चलाए गए इस अभियान की उन्होंने हार्दिक सराहना की। इस प्रकार यह रैली भी अनेक व्यक्तियों को निःस्वार्थ सेवाओं का लाभ देते हुए दिल्ली की ओर बढ़ती जा रही है।

पृष्ठ २० का शेष

कार्य-विशेषतौर पर जनता को **नशीले पदार्थों के सेवन से मुक्ति दिलाने के प्रयास** — की बहुत प्रशंसा की। उन्होंने अपने कुछ सुझाव दिये। उन्होंने कहा — (१) आपको डॉक्टर्स को, विशेषकर सरकारी डॉक्टरों को प्रेरित करना चाहिए कि वे सरकारी हस्पतालों में आने वाले रोगियों से कोई फीस की आशा न करें।

(२) प्राइवेट प्रैक्टिस करने वाले डॉक्टरों के मन में सेवा व सहानुभूति की ऐसी भावना जागृत की जाए कि वे गरीब रोगियों से फीस न लें।

(३) डॉक्टर्स को नशीले पदार्थों की गुलामी से मुक्त होना चाहिए वर्ना वे रोगियों को उस गुलामी से मुक्त करने की प्रेरणा नहीं दे सकेंगे।

भ्राता पटेल जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा — "भारत की गरीब प्रजा गरीबी तथा अन्धश्रद्धा के कारण स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नहीं है। ऐसे समय में यह विद्यालय लोगों में स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागृति लाये — ऐसी मेरी शुभ भावना है। आज मनुष्य व्यसनों का गुलाम बन गया है। ऐसे समय पर इस संस्था ने व्यसन-मुक्ति की जो मशाल उठाई है, वह निरन्तर प्रज्जवलित रहे। स्वस्थ समाज तथा स्वस्थ जीवन के लिए विद्यालय के इस अभियान का मैं स्वागत करता हूँ तथा सफलता के लिए शुभ कामनाये देता हूँ।"

सिविल सर्जन डॉ० सी०बी० शाह ने कहा—"प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा नशीले पदार्थों के विरूद्ध आरम्भ किया गया अभियान सफलता प्राप्त करे, ऐसी मेरी आन्तरिक भावना है।"

दोपहर को सेवाकेन्द्र पर ही 'गांधीनगर समाचार' के पत्रकार भ्राता कृष्ण कान्त व्यास जी से मुलाकात हुई। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—"सर्व के सहयोग से सुखमय संसार कार्यक्रम का अंग यह स्वास्थ्य चेतना अभियान स्वागतीय ही नहीं बल्कि अभिनन्दनीय है। आने वाले कल के भव्य निर्माण के लिए यह कार्यक्रम आधार बनेगा। सफलता आपके साथ रहे—ऐसी मेरी भावना है।"

सायंकाल सेवाकेन्द्र पर ही डॉक्टर्स स्नेह मिलन (Get-together) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। १५ डॉक्टरों ने इसमें भाग लिया। न्युयार्क से पधारी डॉ० कला आयन्गार ने आपने अनुभव के आधार पर **'चिकित्सा एवं ध्यान योग' (Meditation)** विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किया।

रात्रि को गांधीनगर के समीप चिलोड़ा ग्राम में एक सार्वजनिक कार्यक्रम में २०० व्यक्तियों ने लाभ लिया। उन्हें धूम्रपान, तम्बाकू चबाना आदि नशीले पदार्थों को छोड़ने की प्रेरणा मिली।

चार समाचार पत्रों में—**'प्रभात', 'टाइम्स ऑफ इण्डिया', 'जयहिन्द' तथा 'गांधी नगर समाचार'**—में समाचार छपे।

रैली के जोधपुर पहुँचने पर ४ समाचार पत्रों में समाचार छपे—**'दैनिक नव ज्योति', 'दैनिक जनगण', 'राजस्थान पत्रिका', 'दैनिक प्रतिनिधि'**।

इस प्रकार यह रैली भी अत्यन्त सफल रही और आगे-आगे बढ़ती जा रही है।

पृष्ठ २५ का शेष

मनोहर लाल—लेकिन हाँ, आगे बढ़ते समय किसी को पीछे हटाने की कोशिश कभी न करना। किसी को पीछे हटाकर अर्थात् गिराकर कोई भी आगे नहीं बढ़ पाया। सदैव सबके प्रति शुभभावना रखते हुए आगे बढ़ने वाला ही सदा आगे बढ़ता है।

सुमित—हाँ पिताजी, इस धारणा को मैं जरूर अपनाऊँगा...

मनोहर लाल—बेटा, और एक बात है, कभी मूर्खों से दोस्ती नहीं करना। नहीं तो तुम्हें भी मूर्ख साबित होना पड़ेगा।

सुमित—पिताजी, आप मुझपर विश्वास रखो, मैं ऐसा कभी भी नहीं करूँगा।

मनोहर लाल—बेटा, **शिवबाबा के 2 बोल कभी नहीं भूलना...**

- **बच्चे, मैं तुम्हारे साथ हूँ।**
- **बाप के आशीर्वाद का हाथ तुम्हारे सिर पर है।**

सुमित—पिताजी, यह शिवबाबा के सुखदाई बोल सदा मेरे कानों में गूंजते रहेंगे।

मनोहर लाल—बेटा, मेरी अन्तिम शिक्षा है तुम्हें कि ये प्रभु मिलन फिर कभी नहीं होगा। ये ईश्वरीय सुख विनाशी धन से अथवा स्थूल साधनों से कभी नहीं मिल सकता। न विनाशी धन काम आयेगा, न जन। प्रभु का कार्य भी पूर्ण हो जाएगा। कोई महान् प्राप्ति कर लेंगे और कोई हाथ मलते ही रह जाएंगे। तुम्हें सम्पूर्ण ज्ञान है बेटा, तुम गुप्त रूप में आये हुए भगवान् से सब कुछ प्राप्त कर लेना।

सुमित—मैं पूरा जोर लगा दूँगा...

मनोहर लाल—अच्छा बेटा, मैं सदा के लिए आपसे विदाई लेता हूँ, मैंने अपने जीवन में पूर्ण सन्तोष पाया। तुम सब ने मुझे बहुत सहयोग दिया। मुझे विश्वास है कि आप मेरी इन शिक्षाओं के अनुरूप चलते रहेंगे।

हैदराबाद—'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान' के अन्तर्गत आयोजित एक समारोह में मंच पर भ्राता डा० पी०एल० संजीवा रेड्डी, सचिव, स्वास्थ्य विभाग, डा० महेन्द्र रेड्डी, प्रधान भारतीय मेडिकल संघ, हैदराबाद तथा अन्य विराजमान हैं

'अखिल भारतीय स्वास्थ्य चेतना अभियान के अन्तर्गत भुवनेश्वर से निकली डाक्टर्स रैली की इन्चार्ज डा० निरंजन शाह को दवाईयों का एक डिब्बा भेंट करते हुए बहन मनोरमा महापात्र, सचिव, उत्कल साहित्य समाज।

जगदीश चन्द हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओम शान्ति प्रैस, कृष्णानगर, देहली-५१ से छपवाया Regd No. 10563/65-D, (E)—70